परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी एलाचार्य श्री 108 वसुनंदी जी मुनिराज के जीवन पर आधारित काव्यकृति (जन्म से लेकर एलाचार्यपद तक की यात्रा)

दृष्टि

दृश्यों के पार

मंगलाशीषः

प.पू. राष्ट्रसंत, सिद्धांत चक्रवर्ती दि. श्वेतपिच्छाचार्य
श्री १०८ विद्यानंद जी मुनिराज

श्री सत्यार्थी मीडिया प्रकाशक
रविन्द्र भवन इन्द्रा नगर टूण्डला चौराहा
फिरोजाबाद (उत्तर प्रदेश)
मुद्रक :जैन रत्न सचिन जैन "निकुंज"
मो. 9058017645

WRITTEN BY
SHILPI SAKSHI DIDI

A Poetic Biography

DRISHTI DRASHYON KE PAAR

PUBLISHED BY
SATYARTHI MEDIA

रुपये 300/-

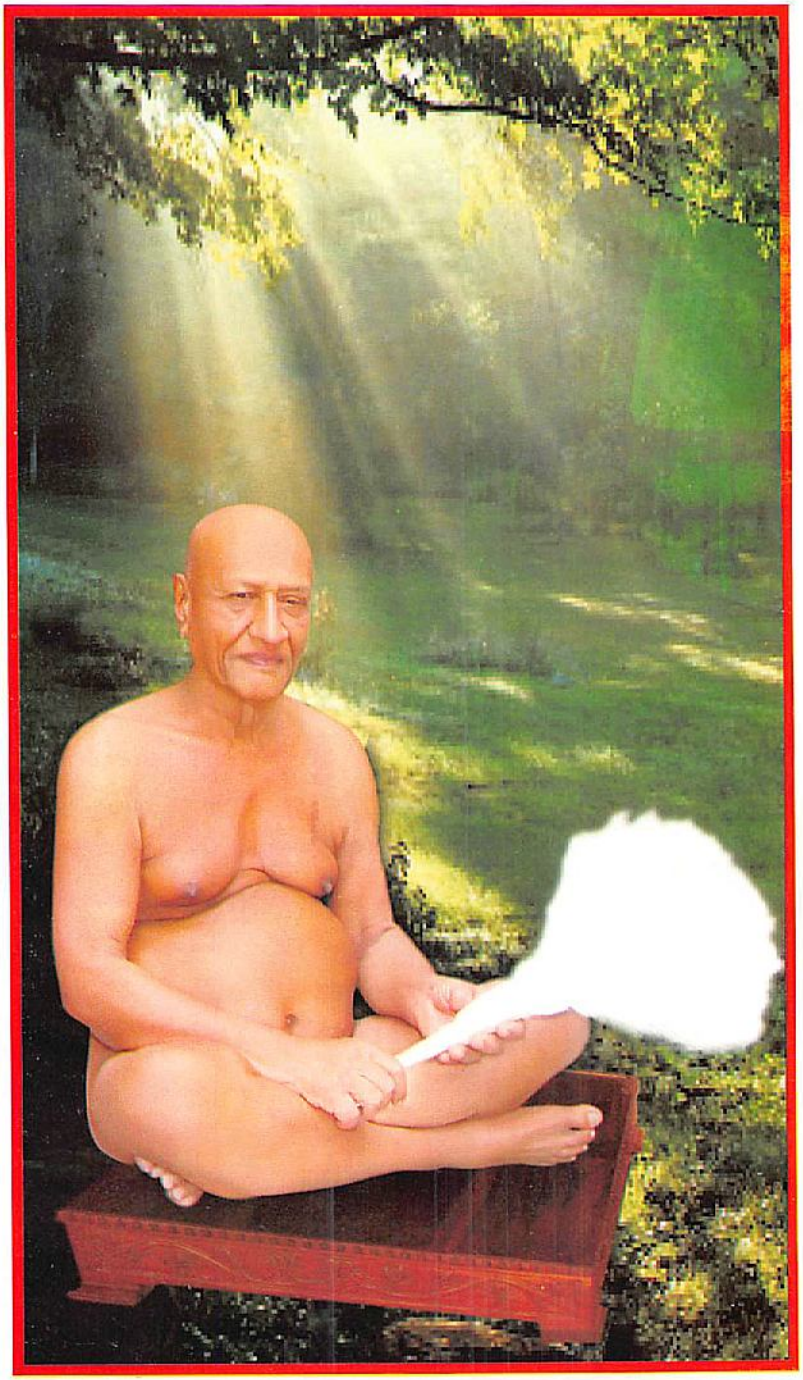

प.पू.गुरुदेव का
शुभाशीर्वाद

सिद्धान्तचक्रवर्ती परमपूज्य आचार्यश्री विद्यानन्द जी मुनिराज का

मंगल आशीर्वाद

एदम्हि रदो णिच्चं, संतुट्ठो होहि णिच्चमेदम्हि।
एदेण होहि तित्तो, होहिदि तुह उत्तमं सोक्खं।।

—(7-14-206)

हे भव्य! तू इस ज्ञान में सदा प्रीति कर, इसी में तू सदा सन्तुष्ट रह, इससे ही तू तृप्त रह। ज्ञान में रति, सन्तुष्टि और तृप्ति से तुझे उत्तम सुख होगा।

"ज्ञानं पूज्यं तपोहीनं ज्ञानहीनं तपोर्हितम।
यत्रद्वयं स देवः स्याद्द्विहीनो गणपूरणः॥"

—(सोमदेवसूरि, यशस्तिलकचम्पू, 815)

अर्थ— तप कम हो और ज्ञान अधिक हो, तो वह भी पूज्य है और ज्ञान कम हो तप अधिक हो तो वह भी पूज्य है। यदि ज्ञान और तप दोनों ही हों तो वह तो परमपूज्य है किन्तु जो ज्ञान और तप दोनों से ही रहित है वह तो केवल संख्यापूरित करने वाला है।

भारतीय साहित्य विविधता में एकता के साथ विकसित हुआ है। भारत में विभिन्न भाषाओं और लिपियों का उदय हुआ है। प्राकृत, अपभ्रंश प्राचीन भाषा का ही रूपान्तर रूप वर्तमान में हिन्दी है। जो कि अत्यन्त सरल, सुबोध और मधुर है। इस भाषा में अनेक धार्मिक ग्रन्थों से लेकर आधुनिक वैज्ञानिक ग्रन्थों की भी रचना हुई है और हो रही है, जिसका प्रभाव विदेशों में भी देखा जाता है।

हिन्दी काव्य पाठ के माध्यम से पं. दौलतराम, द्यानतराय, बुधजन आदि अनेक जैन विद्वानों ने तीर्थंकरों के उपदेश एवं जैन सिद्धान्त ग्रन्थों की अत्यन्त सरल एवं सुगम भाषा में जन साधारण लोगों के लिए रचना लिख कर जैनधर्म की महती प्रभावना की। काव्य-कविता-पाठ आदि के माध्यम से कवि अपने आंतरिक भावनाओं को अच्छी तरह से प्रदर्शित कर सकता है। धर्मानुरागिणी ब्र. शिल्पी, ब्र. साक्षी ने एलाचार्य वसुनन्दि जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को हिन्दी भाषा के अंतर्गत काव्य पाठ लिखने का प्रबल पुरुषार्थ किया है जोकि सराहनीय है।

इस कार्य हेतु मेरा मंगल आशीर्वाद है।

सधर्मवृद्धिरस्तु!

शुभाशीर्वाद

—(आचार्य विद्यानन्द मुनि)

परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी एलाचार्य श्री 108 वसुनंदी जी मुनिराज को

वें

दीक्षा दिवस पर शुभकामनाऐं

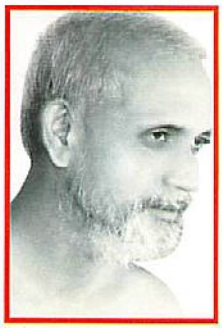

एक आभास....

आज जिस बहुमुखी व्यक्तित्व को हम एलाचार्य श्री वसुनंदी मुनि के नाम से जानते हैं, वह अनेक व्यक्तित्वों का समन्वित रूप है जिसमें सागर का गांभीर्य, अंशु माली का तेज, वैश्वानर की दीप्ति, सुधाकर की सौम्यता, हिमाद्री का आँचल्य, मरुत् का उद्दाम वेग, वसुंधरा की क्षमा और ध्रुव का धैर्य है। उनकी तितिक्षा और अभीप्सा में नचिकेता और प्रज्ञा में शुकदेव का व्यक्तित्व झाँकता है। कितना विलक्षण होगा वह व्यक्ति जो दरिद्र की झोपड़ी से राजमहल तक शांति और स्वस्ति का अलख जगाता चलता है। कितनी गहराई होगी उनकी आँखों में जो वात्सल्य और करुणा की जगपावनी विमल धारा का उत्स है। विश्वास नहीं होता होगा लोगों को कि एक अनगार साधु जिसके पाँव नंगे, जिसके सिर पर कोई छत्र नहीं, कुटुंब के नाम पर एक कृश काया, किन्तु हृदय में "वसुधैव कुटुंबकम्" की उदान्त भावना, किस प्रकार जनता का हृदय - सम्राट बना । बसंत आता है अलस - उन्मत और चंचल पतझर आता है - उदास - कुंठित और श्रीहीन, ग्रीष्म का आतप और शीत के तुषार किंतु सबसे निरपेक्ष सदाबहार यह मनस्वी कौन है जिसकी आँखें शून्य की विभुता से साक्षात्कार करती हुई किसी एक बिन्दु पर केंद्रित हो गयी हैं। अवश्य यह कोई महायोगी होगा जो नश्वर संसार की भंगुरता की उपेक्षा करता हुआ आत्मकैवल्य की आभा से सम्मोहित हो चुका है। नहीं ऐसा नहीं हो सकता वह तो हृदय की भग्न तंत्री में एक दीर्घ आलाप भरकर झंकृत करता जा रहा है परिवेश को संभवतः अमृत बाँटने की अभिलाषा उसके पाँव धरती पर टिकने नहीं देती, वह चल रहा है गहरे - उथले, उबड़ - खाबड़ विविध व्यवधानों की बिना परवाह किये। सघन आम्र कुंजों में जब कोकिल का मर्मभेदी गीतस्वर मुखरित होता है, नवोढ़ा कलियों को श्रृंगार अलि - गुंजन को मौन निमंत्रण देता है, पवन - बाँसुरी का मादक - स्वर केलि - सरोवर की अभिराम जलराशि को स्पंदित करता है, सौरभ के भार से झुका हुआ पवन दोल अवश हो जाता है, तरुण तपस्वी की कुंचित केशराशि विभा के निमिशंकित प्रमाद को अपदस्थ कर मदन - विजयिनी की संज्ञा से अभिहित होती है।उसकी अनेकांतमयी वाणी में नवयुग के अभिनव प्रत्युष की अमर भैरवी निर्नादित होती है जिसे सुनकर यौवन उद्बुद्ध होता है, सुप्त आत्मगौरव जागृत होता है और तपस् के अभेद्य आवरण को चीरती हुई असंख्य किरणें युग को अभिनव आलोक से पूर देती है। मौन और आहत स्वरों की रागिनी अंगड़ाई लेती है और बज उठती है प्रयाण की भेरी। ऐसा सम्मोहन, ऐसा उद्बोधन, ऐसी प्रेरणा क्या किसी एक ही व्यक्ति में निःसृत हो रही है। संगीत - योगी तानसेन ने जब दीप मलार गाये थे, लक्ष - लक्ष मृण्मय दीपों से अग्निशिखा प्रज्वलित हो उठी और जब मेघ - मलार का समय आया तृषिता धरित्री को तप्त करने के लिए मेघराशि आकाश मंडल से उतर आयी थी किंतु जो एक साथ दीप और मेघ मलार लेकर अवतरित हुआ हो उसके, अनेक संभावनाऐं, असंख्य प्रतिमान और अमित प्रतीकों का पूंजीभूत रूप - असंख्य दीपों की एक शलाका, असंख्य पुष्पों की एक सुरभिराशि, अनेक तीर्थों का एक संगम, अनेक मेरुओं का एक सुमेरू, अनेक मातृकाओं में एक प्रणव, वही तो हैं एक में अनेक और अनेक में एक - एलाचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज

प्रस्तुति - ब्र.शिल्पी जैन साक्षी जैन

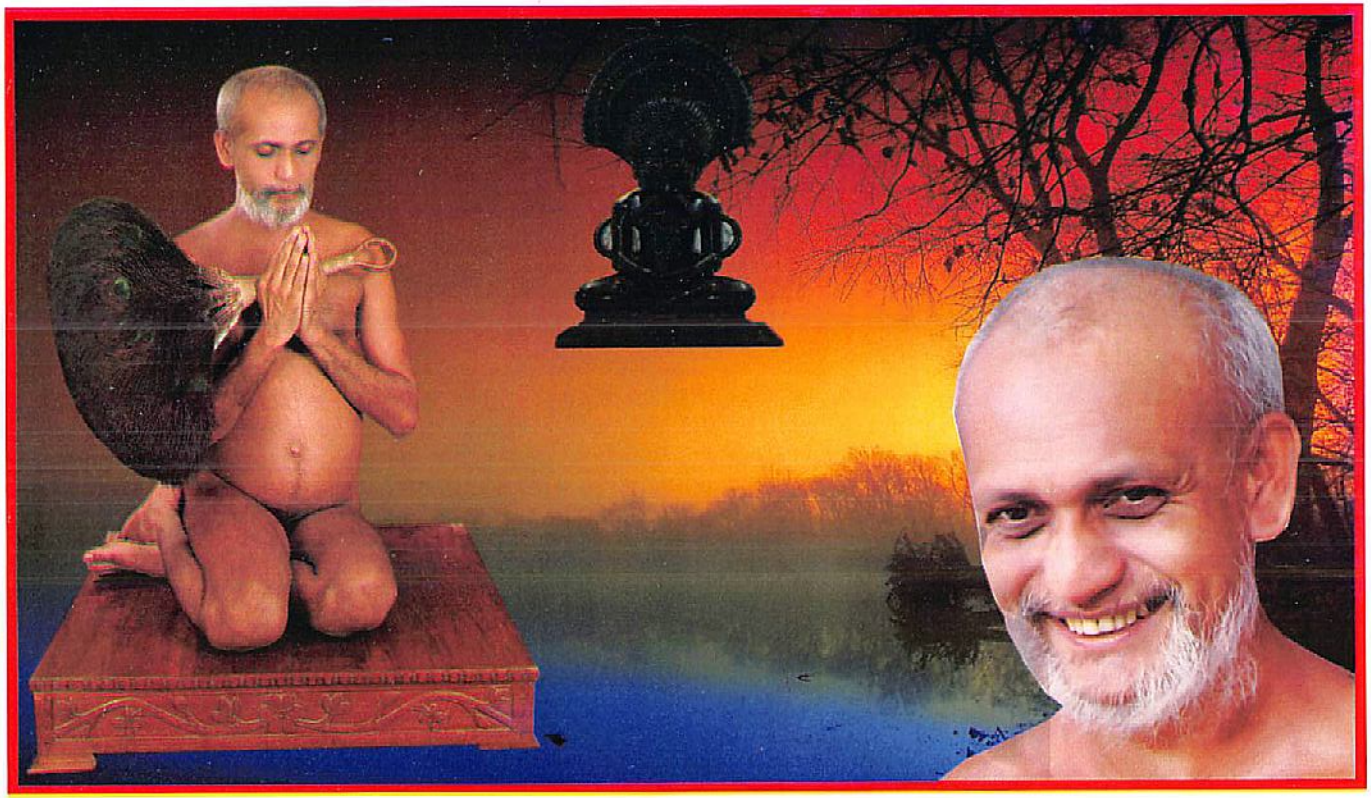

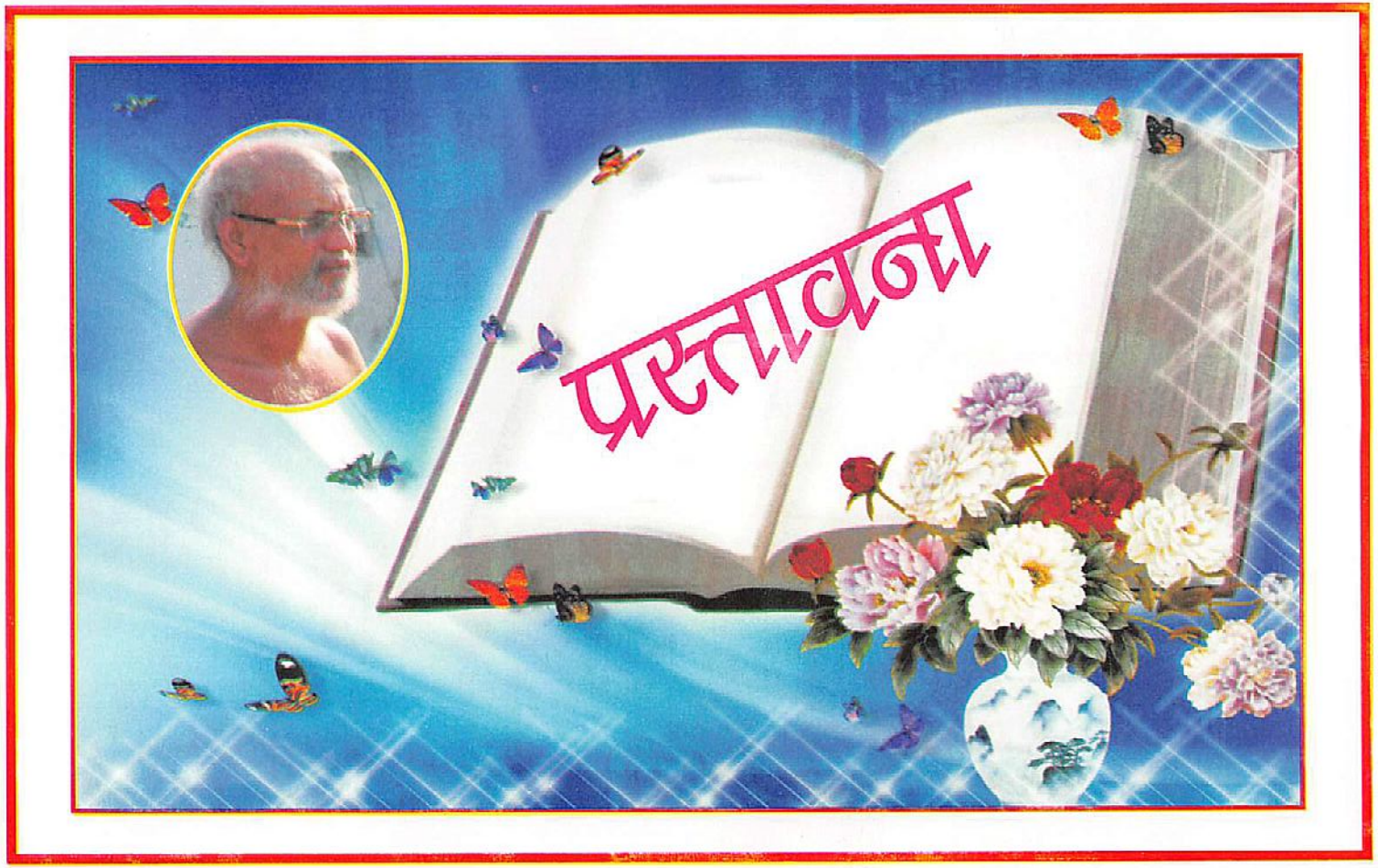
प्रस्तावना

अनुक्रम

प्रस्तावना
जन्म एवं बाल्यकाल
शिक्षा-दीक्षा
वैराग्य का कारण
व्यक्तित्व
मोक्ष पथ पर अग्रसर
मुनि दीक्षा
उपाध्याय पद
एलाचार्य पद
परम पूज्य गुरुदेव

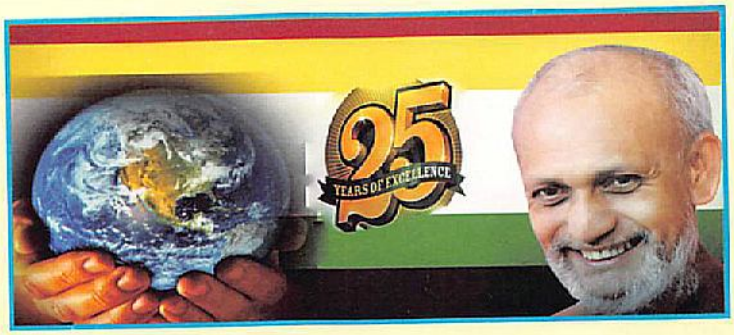

देशों
में देश एक
जो भारत महान् है।

विश्व गुरु
के नाम से
इसकी पहचान है।

विद्या
आध्यात्मिकता का
सूत्रपात कर दिया ।

सम्यक्
मार्ग विश्व
को प्रदान कर दिया ।

अनेक
ऋषि संत
भगवंत हुए हैं।

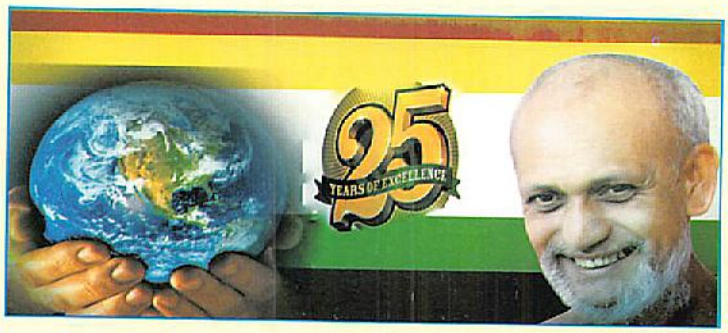

कर्मों
को नाशकर
वही अरिहंत हुए हैं।

जीओ
और जीने दो
संदेश सुनाया ।

प्राणी
को मोक्ष मार्ग
का उपदेश बताया।

प्रत्यक्ष
वे अरिहंत
अब सामने नहीं।

पर
उनके प्रतिरूप
दूर हमसे नहीं।

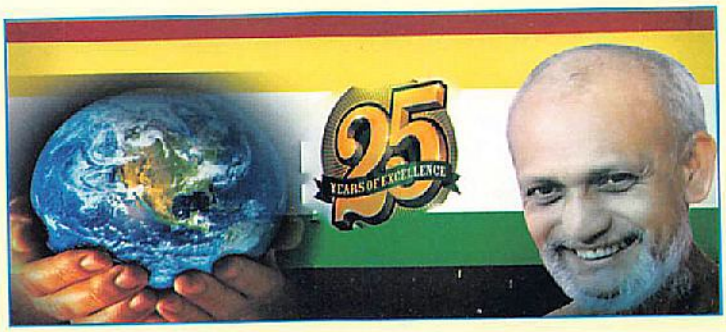

प्रत्यक्ष
में चाहो करें
अरिहंत का अर्चन।

तो
निर्ग्रंथ दिगंबर
मुनिवर का करो दर्शन ।

हरते
ये ऋषि संत
जन - जन की पीर हैं।

और
कोई नहीं ये
आज के महावीर हैं।

अठारहवीं
शताब्दी के
आचार्यवर शांतिसागर।

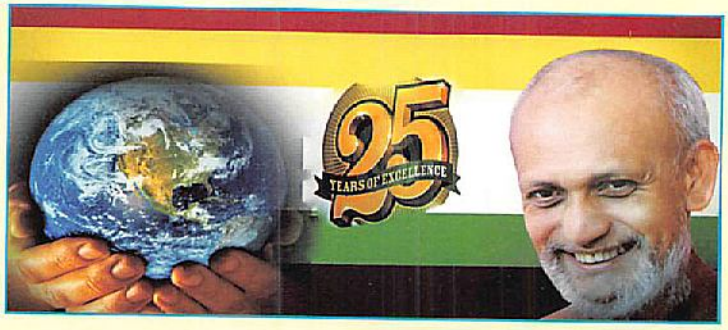

चारित्र
चक्रवर्ती हुए
गुण निधि आगर।

उन्हीं
कि परंपरा में
आचार्य पायसागर जी।

जयसागर
देशभूषण
व विद्यानंद जी।

इन्हीं
के शिष्य
जो संत महान् हैं।

वसुनंदी
है नाम जो
देश की शान हैं।

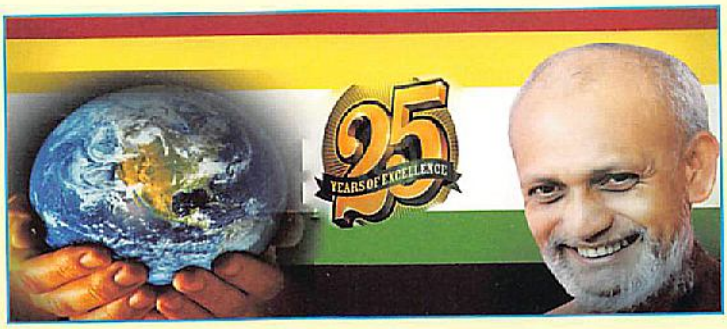

नन्हें
पंखों में
समा आकाश नहीं सकता।

सीप
में सागर को
कोई भर नहीं सकता।

गुरुवर
कि गौरव गाथा
फिर भी हम सुनाते हैं

आकाश
को समेटने
का साहस जुटाते हैं ।

जन्म एवं बाल्यकाल

3-10-1967
मनिया
MANIA
मनिया में रवि का उदय
बाल्यकाल अवस्था
साधारण से गाँव में जन्म लेने वाला
आज इतना असाधारण कैसे हो गया

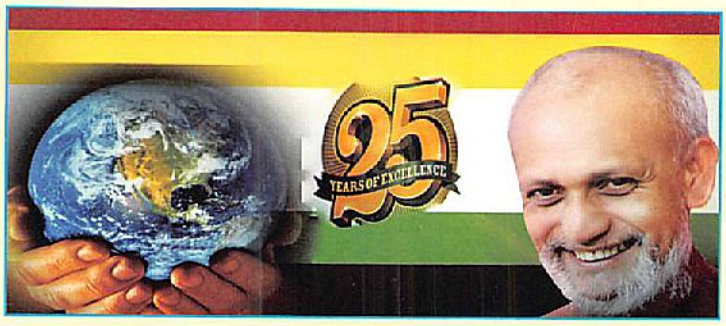

चारों
तरफ अंधेरा
मावस कि रात थी ।

घड़ियाँ
बीत रहीं
किसी के इंतजार की ।

सन् उन्नीस
सौ सड़सठ
वह वर्ष निराला।

तीन
अक्टूबर को
हुआ तब ही उजाला।

राजस्थान
भूमि जिला
धौलपुर कहा ।

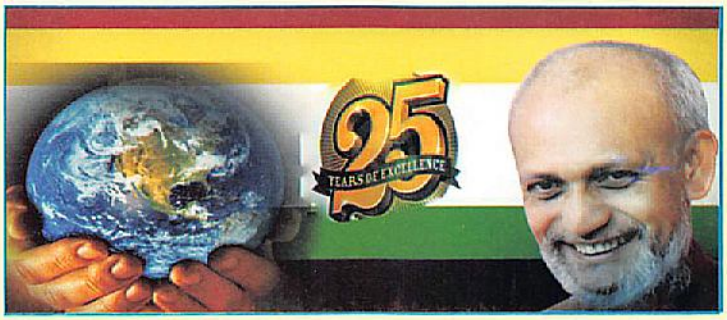

ग्राम
विरौधा परम
धन्य तभी हुआ ।

मानो
गगन का चांद
तब उतरा था जमीं पर ।

त्रिवेणी
माँ के आँचल
में ममता कि मही पर।

चौपाल
पर बैठे थे
तब गाँव के सभी ।

पुत्र
प्राप्ति सुन
दौड़ आए थे सभी ।

गाँव
में लहर एक
खुशी कि छा गई ।

मावस
कि रात भी
नया प्रकाश पा गई ।

पिता
ऋषभ के घर
तो अब खुशियों कि बौछार ।

होली
दिवाली आ गए
सब साथ में त्यौहार ।

माता
पिता की खुशी
का ठिकाना नहीं था ।

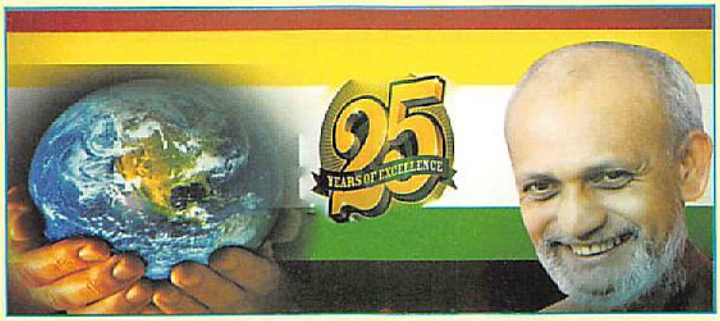

सूरज
से ओज ने
था चेहरे को निखारा ।

'दिनेश'
"रवि"नाम से
बालक को पुकारा ।

क्या
था पता
बालक नाम सार्थक करेगा ।

सूरज
सा यश
धरती पर विस्तार करेगा ।

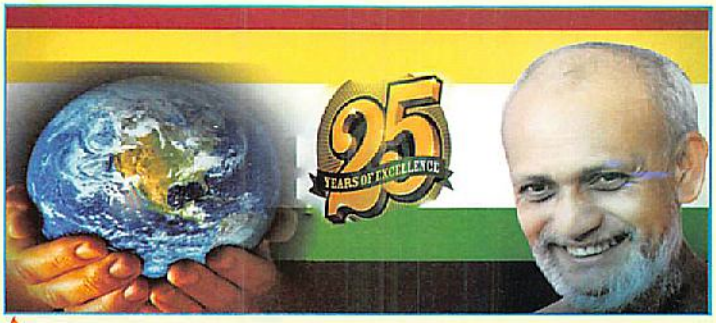

गाँव
वालों का दुलार
कुछ कम नहीं था ।

किल
कारियों से उस
कि घर गूंजने लगा ।

घुटनों
के बल अंदर
बाहर घूमने लगा ।

गाँव
में सभी का
मन मोहने लगा ।

नन्हें से
राजकुमार से
स्वर प्रेम का जगा ।

शिक्षा - दीक्षा

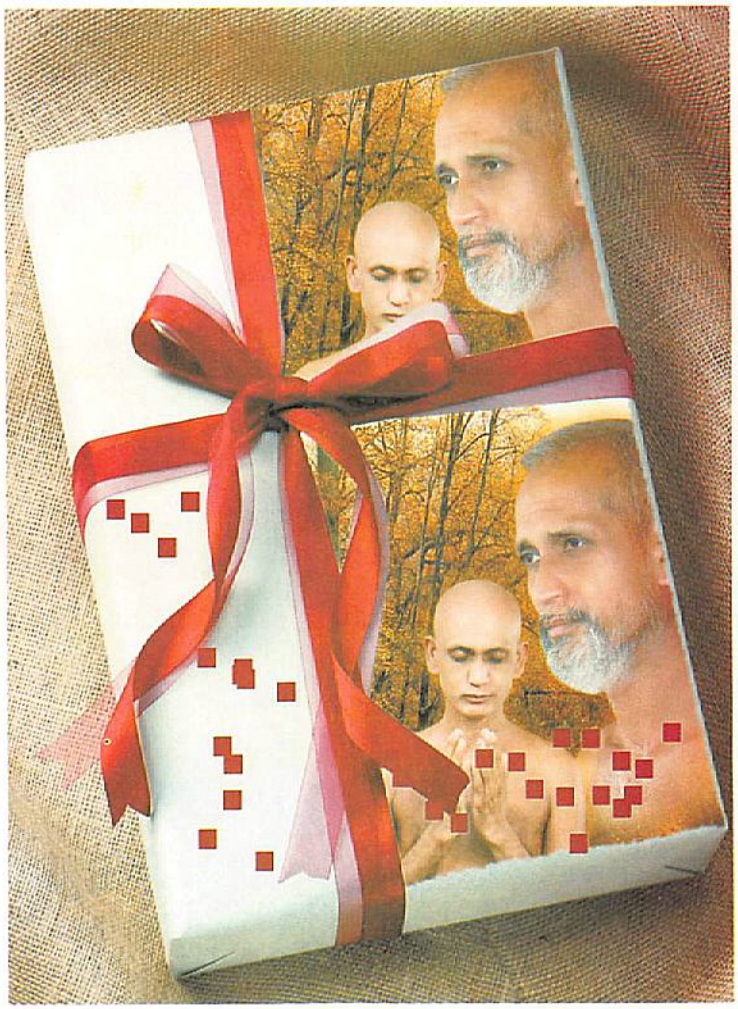

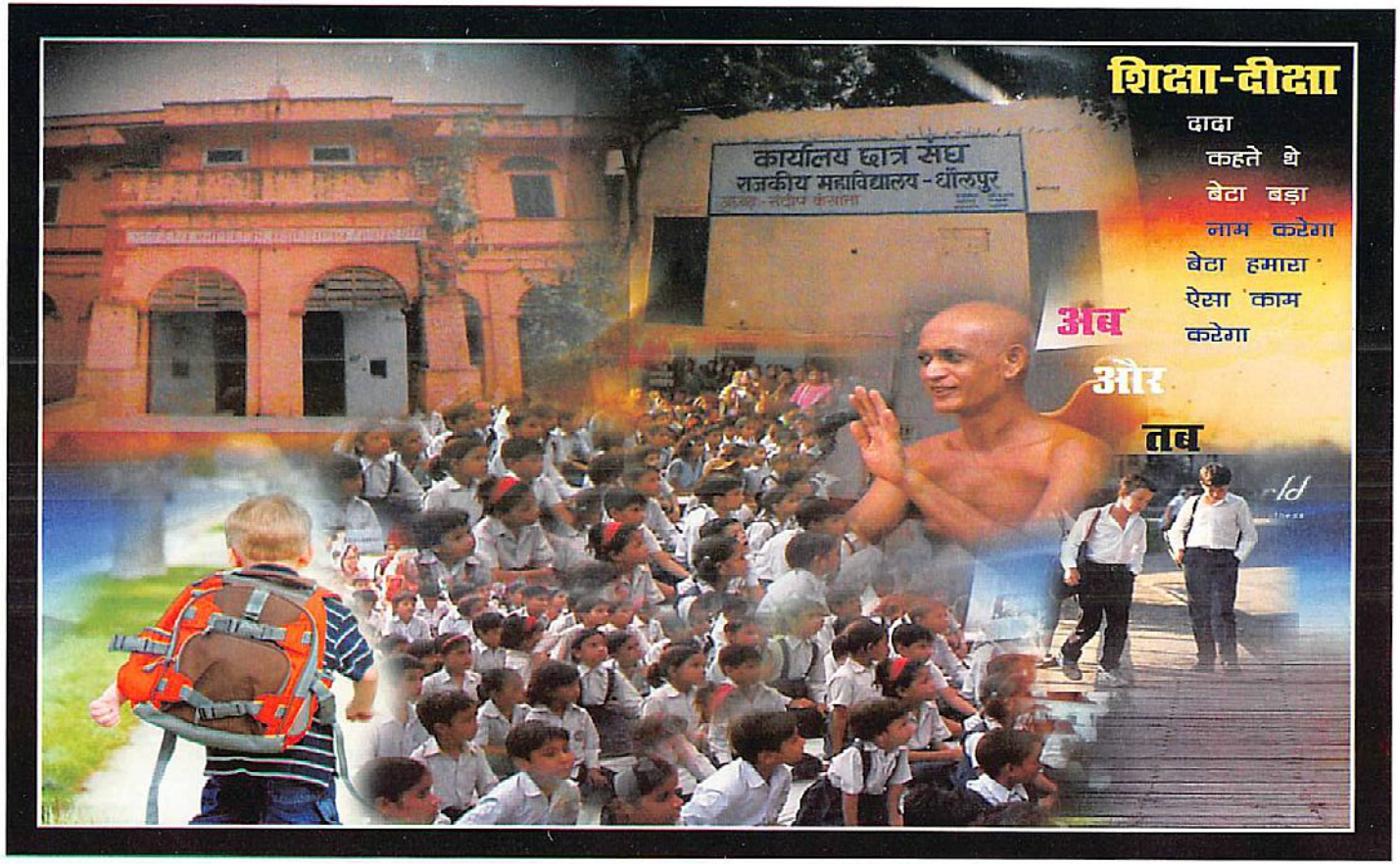
शिक्षा-दीक्षा
दादा
कहते थे
बेटा बड़ा
नाम करेगा
बेटा हमारा
ऐसा काम
करेगा
अब
और
तब
कार्यालय छात्र संघ
राजकीय महाविद्यालय - धौलपुर

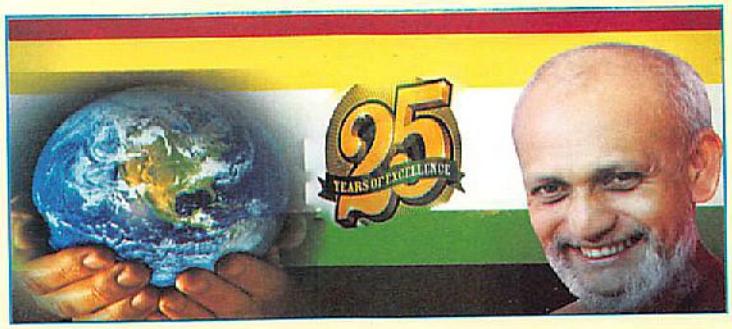

बाल
क्रीड़ा से सभी
के मन को लुभाया ।

स्कूल
कि ओर अपना
पहला कदम बढ़ाया ।

छोटे -
छोटे कदमों
से पहुँचा खिला चमन ।

उसने
सभी अध्यापकों
का जीत लिया मन ।

पाबंद
समय का वह
बचपन से ही रहा ।

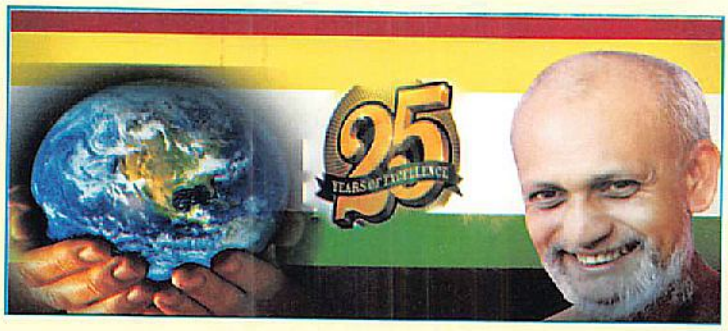

अनुशासित
रह कर सभी
के चित्त को हरा ।

धीरे -
धीरे बालक कि
प्रतिभा बढ़ती ही गयी ।

उगते
हुए सूरज पे
तब सबकी नजर गयी ।

टैस्ट
या इक्ज़ाम
सभी में फर्स्ट वो आता ।

अध्यापकों
का खूब
लाड़ प्यार वो पाता ।

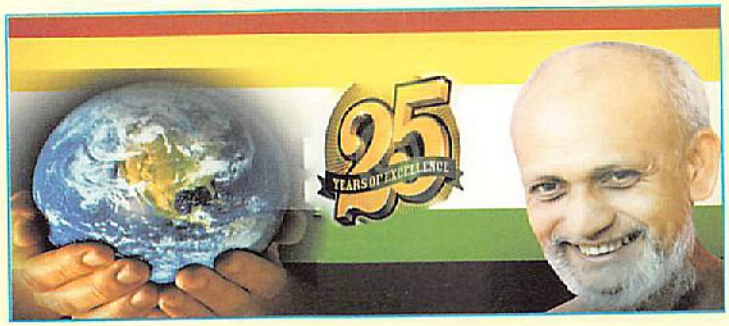

पढ़ाई
में रुचि तो
रवि कि विशेष थी ।

पुस्तकों
के बीच एक
दुनिया विशेष थी ।

अच्छे
संस्कारों से
दिनेश था सजा ।

सभी
विद्यार्थियों का
वो आदर्श था बना ।

गणित
में तो बालक
ने कर दिया कमाल ।

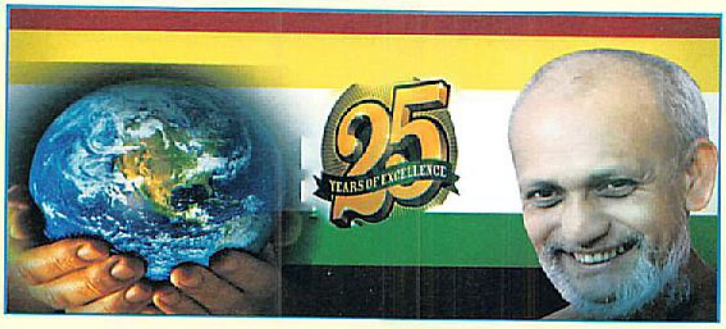

स्कूल
में अपने
मचाया था तभी धमाल ।

प्रश्न
लिखा जाता
बोर्ड पर था बाद में।

उत्तर
सदा रहता
नन्हें बालक के साथ में ।

तीव्र
स्मरण शक्ति
शुरू से रवि कि थी।

परछाई
उसमें एक
नन्हें कवि कि थी।

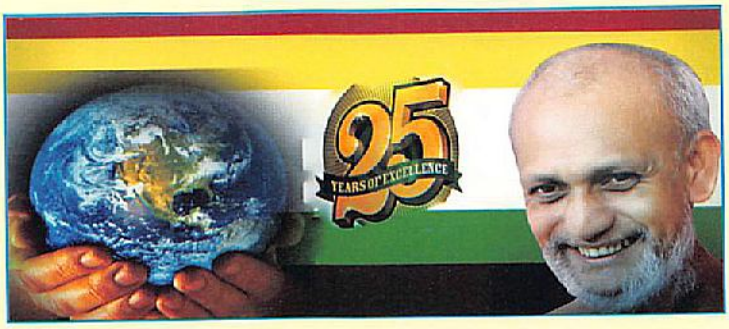

कविताओं
आदि में भी
अपनी प्रतिभा दिखाई ।

"ऑल राउण्डर"
नाम से
अपनी पहचान बनाई ।

मन
लगा बालक वह
अपना, पा रहा शिक्षा ।

फर्स्ट
क्लास पास
की दसमी कि परीक्षा ।

बालक
वह और
आगे पढ़ता गया ।

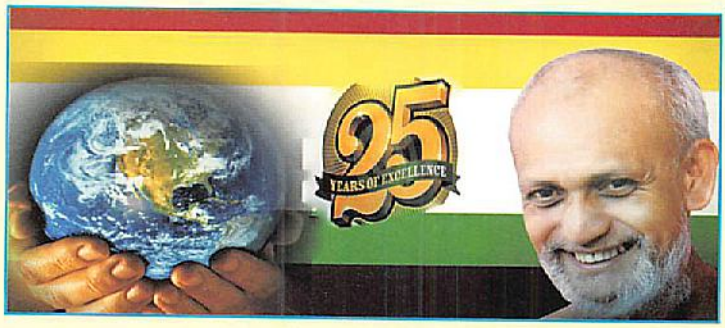

दुलार
में अध्यापकों
के बढ़ता गया ।

महाराणा
प्रताप कॉलेज
कि ओर पग बढ़े ।

इंटर
किया वहाँ भी
सबसे आगे ही खड़े ।

धौलपुर
यूनिवर्सिटी में
प्रवेश लिया था ।

बी.कॉम
करने का मन
में संकल्प किया था ।

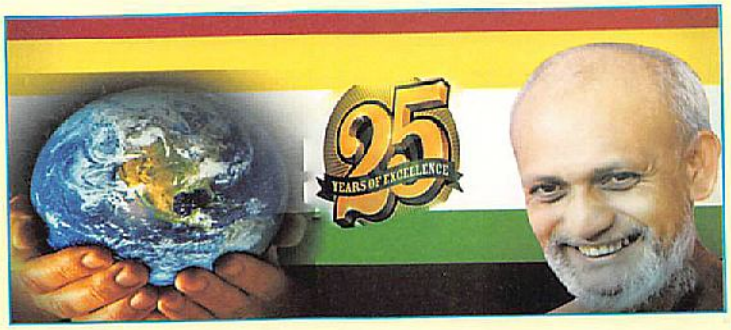

प्रतिभा
से अपनी
नया स्थान बनाया ।

अकाउंट्स
में कॉलेज में
अपना लोहा मनवाया ।

सी.ए.
करने जयपुर
जाने की थी तैयारी ।

वैराग्य
ने तो क्षण
में दुनिया पलट दी सारी ।

छिपा
अकाउंट्स बुक
में छहढाला को पढ़ते ।

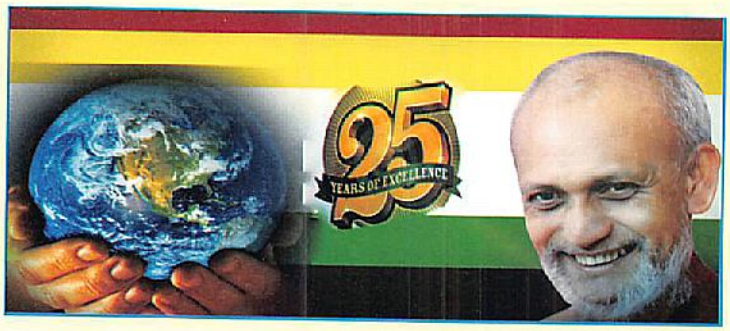

पिता
ये देख समझे
कदम ओर किस बढ़ते ।

आध्यात्मिक
विधा की ओर
रुझान अब बढ़ा ।

परमार्थ
लौकिक विधा
का चला यूँ सिलसिला ।

वैराग्य का कारण

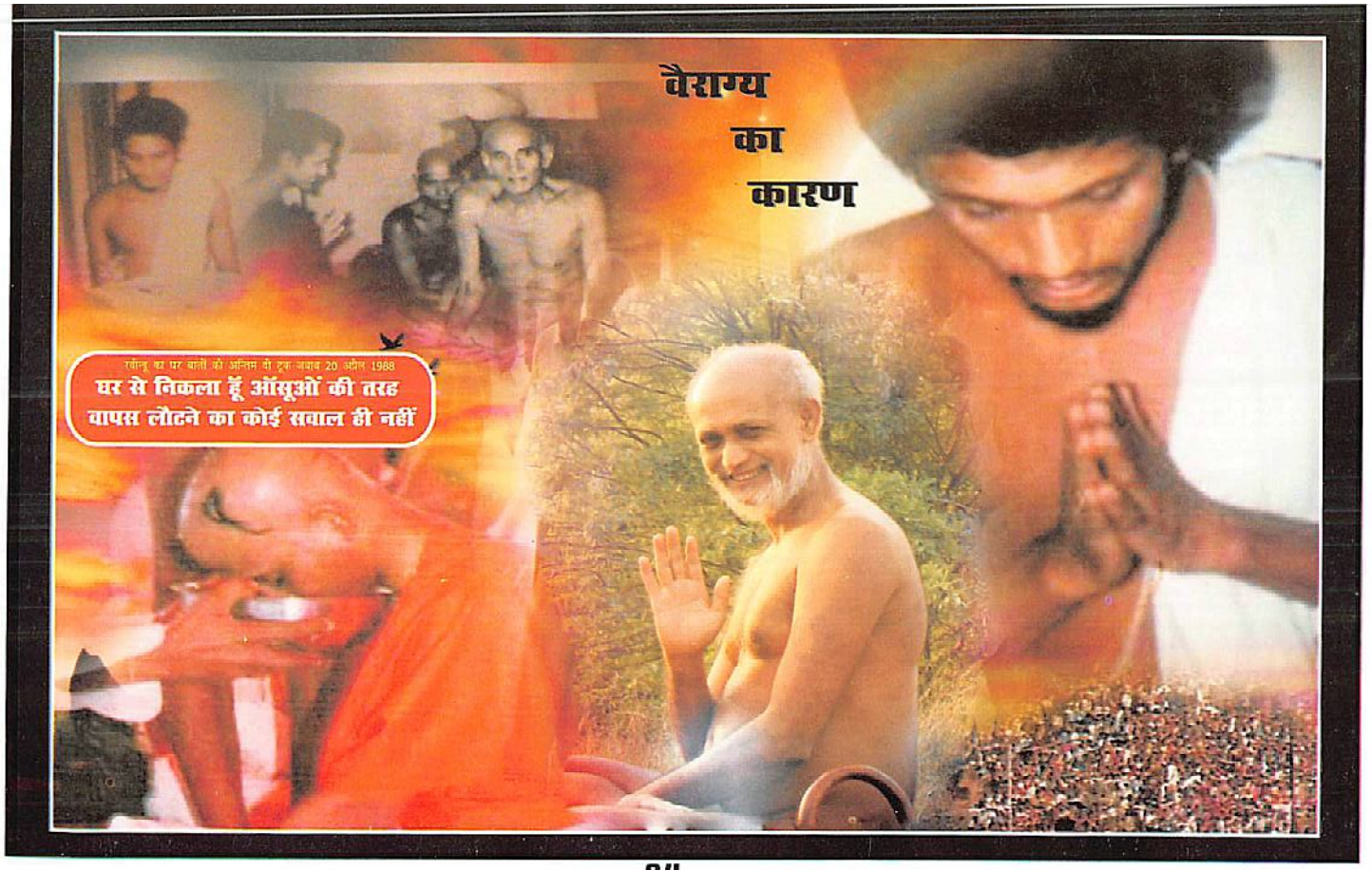

वैराग्य
का
कारण
रवीन्द्र का घर वालों को अन्तिम दो टूक जवाब 20 अप्रैल 1988
घर से निकला हूँ आँसूओं की तरह
वापस लौटने का कोई सवाल ही नहीं

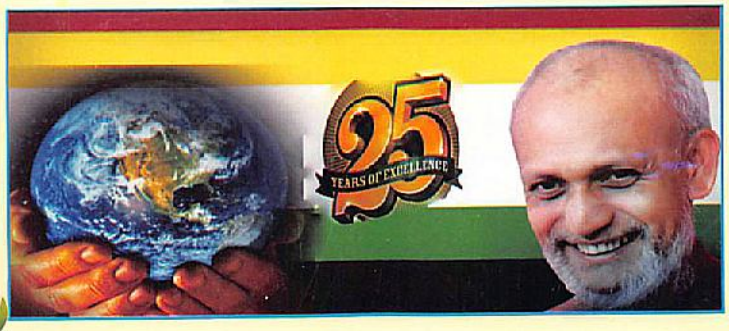

पिता
के मूल
संस्कारों का प्रभाव था ।

बचपन
से ही सौम्य
सहज इसका स्वभाव था ।

शादी
न करने कि
तो बचपन से ठानी थी ।

शाश्वत
दशा प्रभु सिद्ध
कि उसको जो पानी थी ।

छहढाला
कि पंक्तियों
से मिलता था उसे बल ।

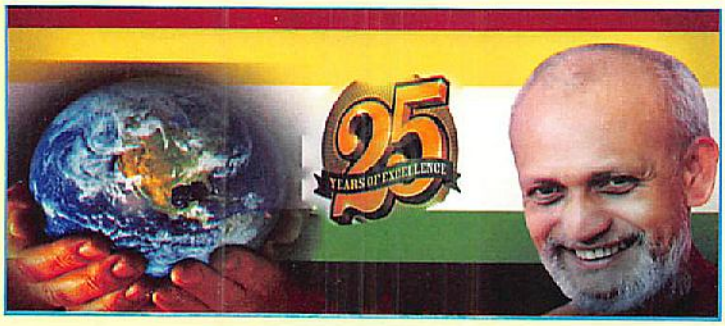

युवा
मृत्यु ने इन
भावना को कर दिया प्रबल ।

संसार
कि असारता
झलकती थी हर समय।

उलझे
हुए थे प्रश्न
आखिर कहाँ जाऊँगा अब मैं?

परछाई
देख कुएँ में
मन और गहराया ।

नश्वर
क्षणिक संसार है
कुछ सार न पाया ।

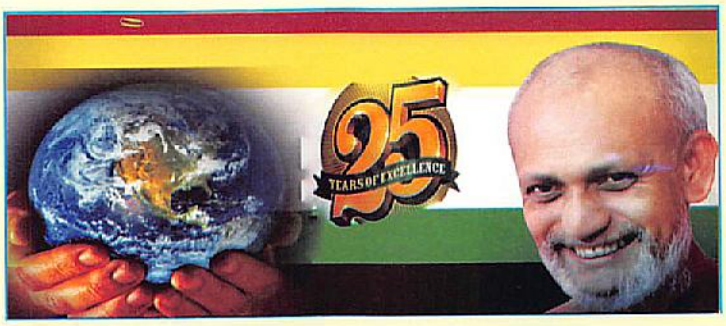

अपने
जीवन का
बनाया नया प्रारूप।

शुद्ध
दशा को पाना
ही जीव का स्वरूप।

व्यक्तित्व

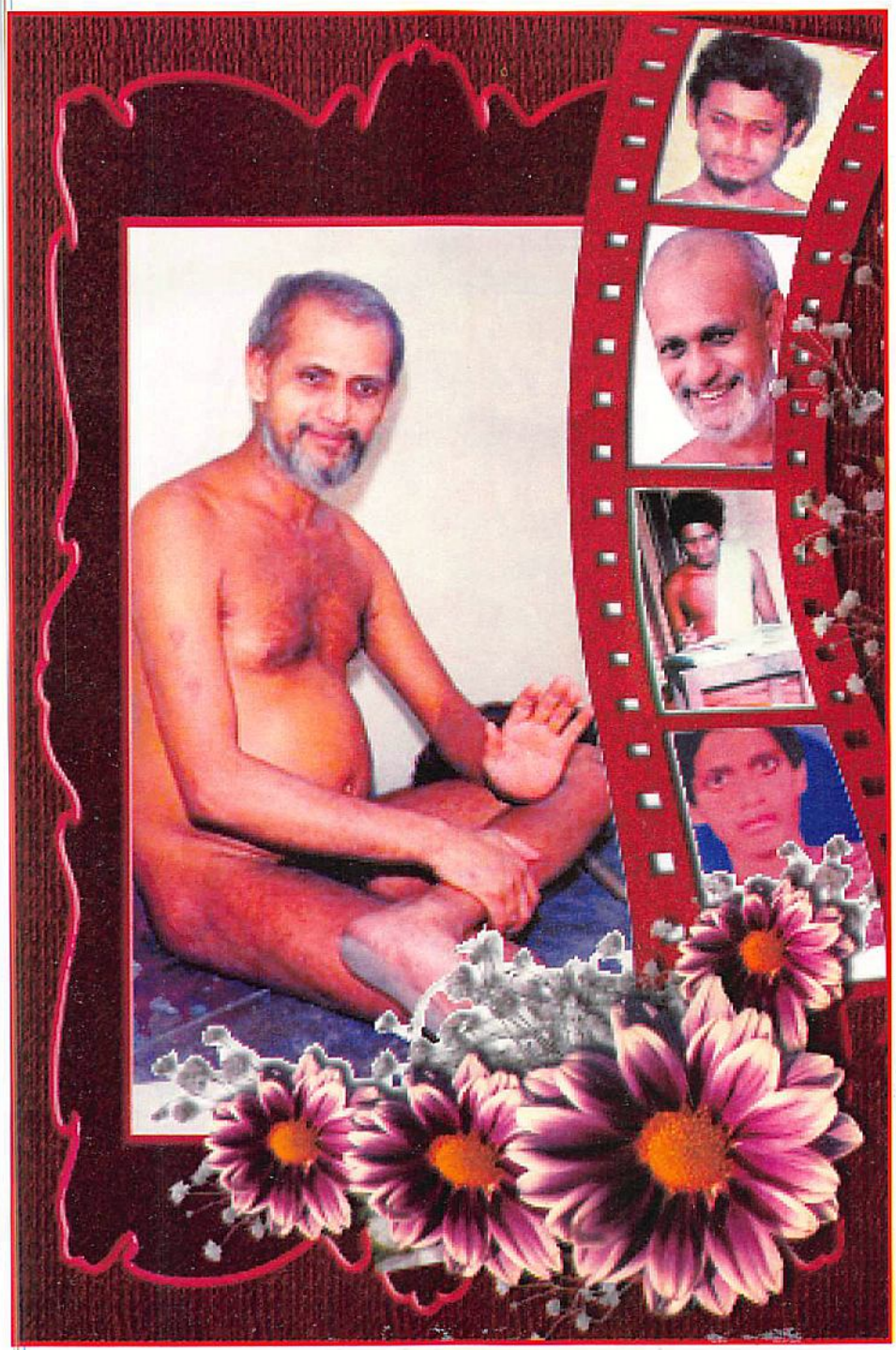

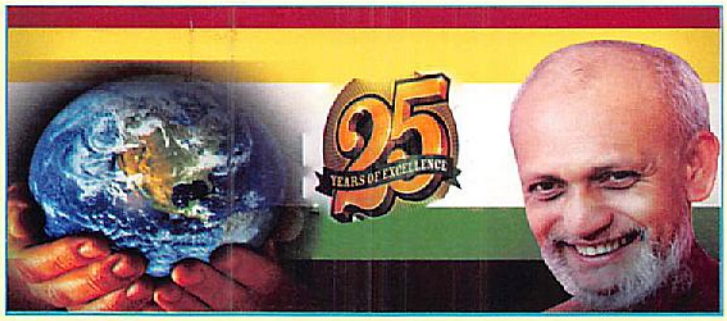

काम
ऐसा जग में
कुछ करके दिखाना है।

मरने
के बाद भी
अमर होके बताना है।

बचपन
से ही थी मन
में उनकी ऐसी तमन्ना।

तब
क्या पता था
आज का भगवान है बनना ।

वात्सल्य
स्नेह प्रेम ये
कुछ भी नहीं था कम ।

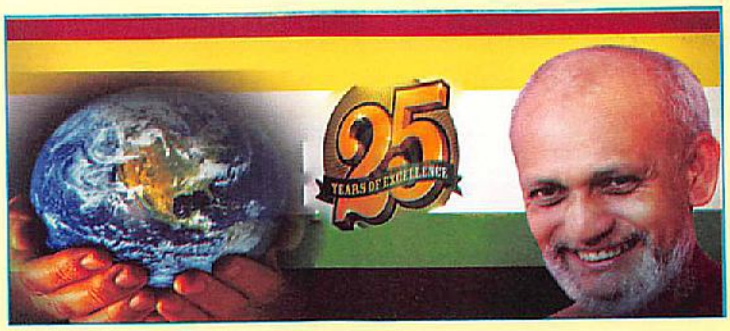

पीड़ित
किसी को देख
हो जाती थीं आँखें नम ।

दुःख
दर्द दूर करने
कि रहती थी भावना ।

अन्याय
को जग से
मिटाने की थी कामना ।

पशु
और पक्षियों से
भी गहरा लगाव था ।

कोई
कष्ट कभी भी
न हो मन में ये भाव था ।

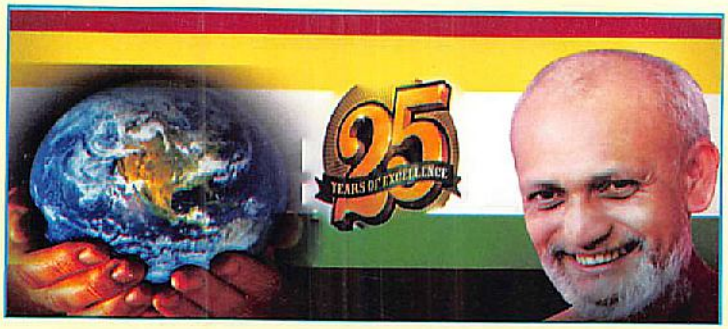

दाना
ये पक्षियों को
प्रतिदिन ये डालते ।

उनके
लिए चढ़ पेड़
पर भर पानी टाँगते ।

कटते
देख चारे को
इक बार यूँ सोचा ।

मशीन
में जा करके
कितना कष्ट है होता ।

ये सोच
तब मशीन में
थी अंगुली डाल दी ।

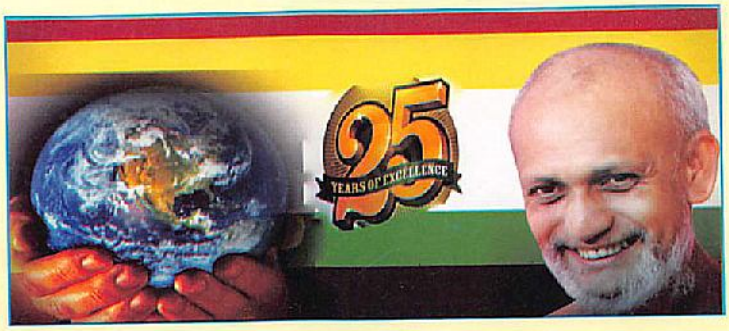

पिता
कि दृष्टि गई
तब लहूलुहान थी ।

कारण
के पूछने पे
बालक ने बताया ।

पेड़
भी ये जीव
हैं आपने था समझाया ।

हम
सब की तरह
दर्द उसके होता तो होगा ।

दिखता
नहीं पर पेड़
भी वह रोता तो होगा ।

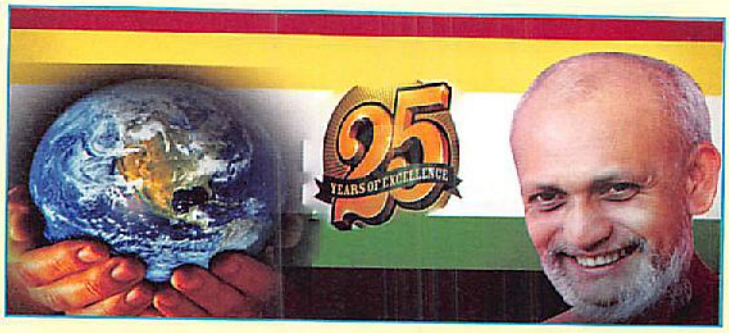

पिता
ने तब बालक
को पूरी बात समझायी ।

जीवित
रहें जड़ से जुड़े
तब तक ही बतायी ।

करुणा
दया व उसमें
थी सवेदना भारी ।

देखो
बता रही है
घटना यही सारी ।

एकेन्द्रिय के
दुःख को भी
जो देख न पाता ।

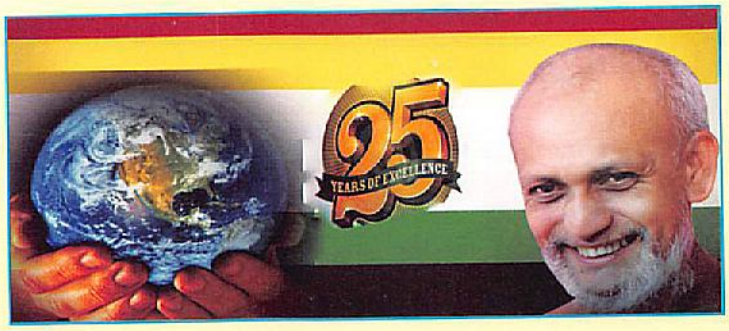

ऐसी
दया - संवेदना
को शीश झुकाता ।

पिता
थे जमींदार
उस विरौधा गाँव में ।

चलती
थी उनकी आस-पास
बीस गाँव में।

सभी
कि समस्याओं
को करते थे पिता हल ।

ऋषभ
पिता से दिनेश
को मिला सम्बल ।

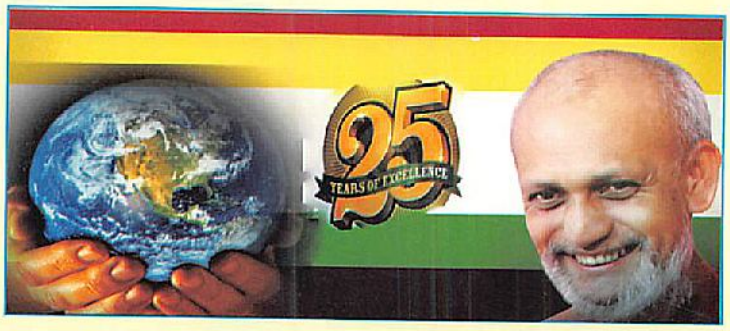

कैसी
भी समस्या हो
समाधान पास था

हर
टेढ़े - मेढ़े प्रश्न
का हल लाजवाब था ।

समझदारी
पर रवि कि
था गाँव अचंभित ।

नन्हें
से बालक ने
सभी को कर लिया मोहित ।

अच्छे
संस्कारों से
जीवन को था गढ़ा ।

गाँव
को पूरे रवि
पर नाज था बड़ा ।

अपना
कार्य वे समय
पे पूर्ण करते थे ।

पढ़ाई
में मदद सदा
सबकी ही करते थे ।

शिक्षकों
के ये बड़े
विश्वास पात्र थे ।

पढ़ने
पढ़ाने के सदा
शौकीन मात्र थे ।

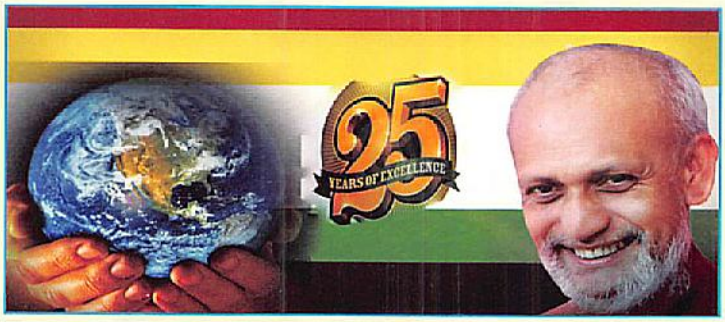

गहरा
रहा इनका
किताबों से सदा नाता ।

पुस्तक
कलम का साथ
ही इनको सदा भाता ।

काव्य
कविता का
पाठ लगता था अच्छा ।

पाठ
सभी को पढ़ाते
थे सदा सच्चा ।

कविताएँ
वीर रस कि
इनके मन को थी भातीं ।

कथा
कहानी भी न
इनसे दूर रह पातीं ।

पिता
कि मदद करता
उनका दाँया हाथ था ।

व्यवसाय
कृषि कार्यों में
भी लाजवाब था ।

बाल्यपन
से ही प्रभु
का ध्यान थे धरते।

भगवान
के सम बैठ
के सामायिक थे करते।

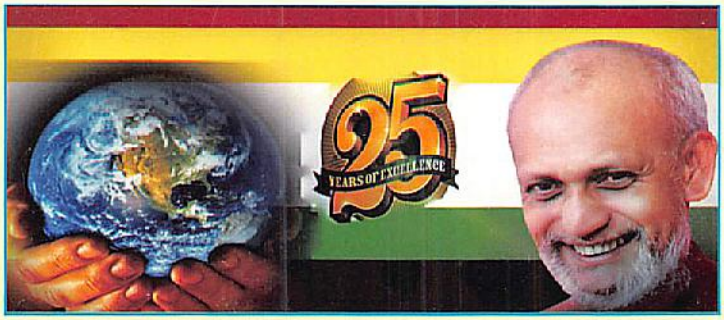

एक
स्वप्न छोटे से
दिखता था बार - बार।

सामायिक
में बैठा मैं
सर्प घेरे हैं अपार।

करने
में रक्षा सर्प
तत्पर सदा रहते।

परिक्रमा
लगा के सब
पूजा थे करते ।

अद्भुत
मनन चिंतन व
ध्यान छोटी सी काया ।

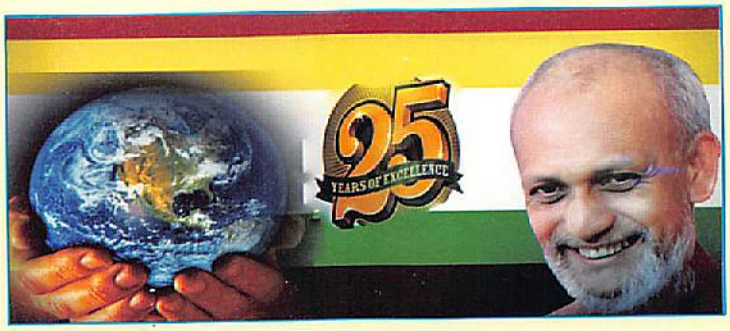

दैवी
शक्तियों ने भी
था शीश झुकाया ।

सोच
लेते काम जो
पूरा उसे करते।

करके
दिखाने में
सदा विश्वास थे रखते ।

जिंदगी
के उनके कुछ
पावन उसूल थे ।

सत्
मार्ग पे चले
चाहे कितने भी शूल थे ।

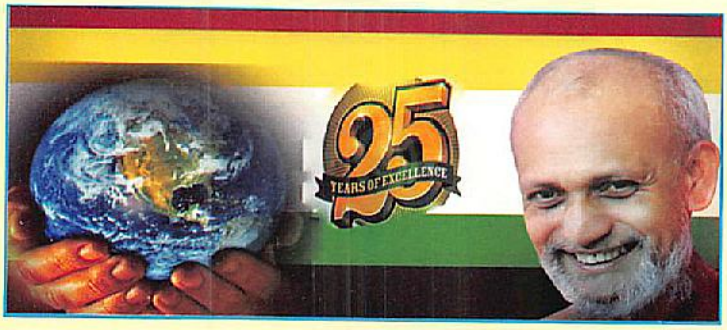

प्रतिकूलताओं
को सदा ही
समता से सहा ।

चुंबकीय
आकर्षण एक
व्यक्तित्व में रहा ।

सौम्य
सहज और
सरल मूर्ति हैं सही ।

गुस्सा
तो चेहरे पे
कभी देखा ही नहीं ।

मोक्ष पथ पर अग्रसर

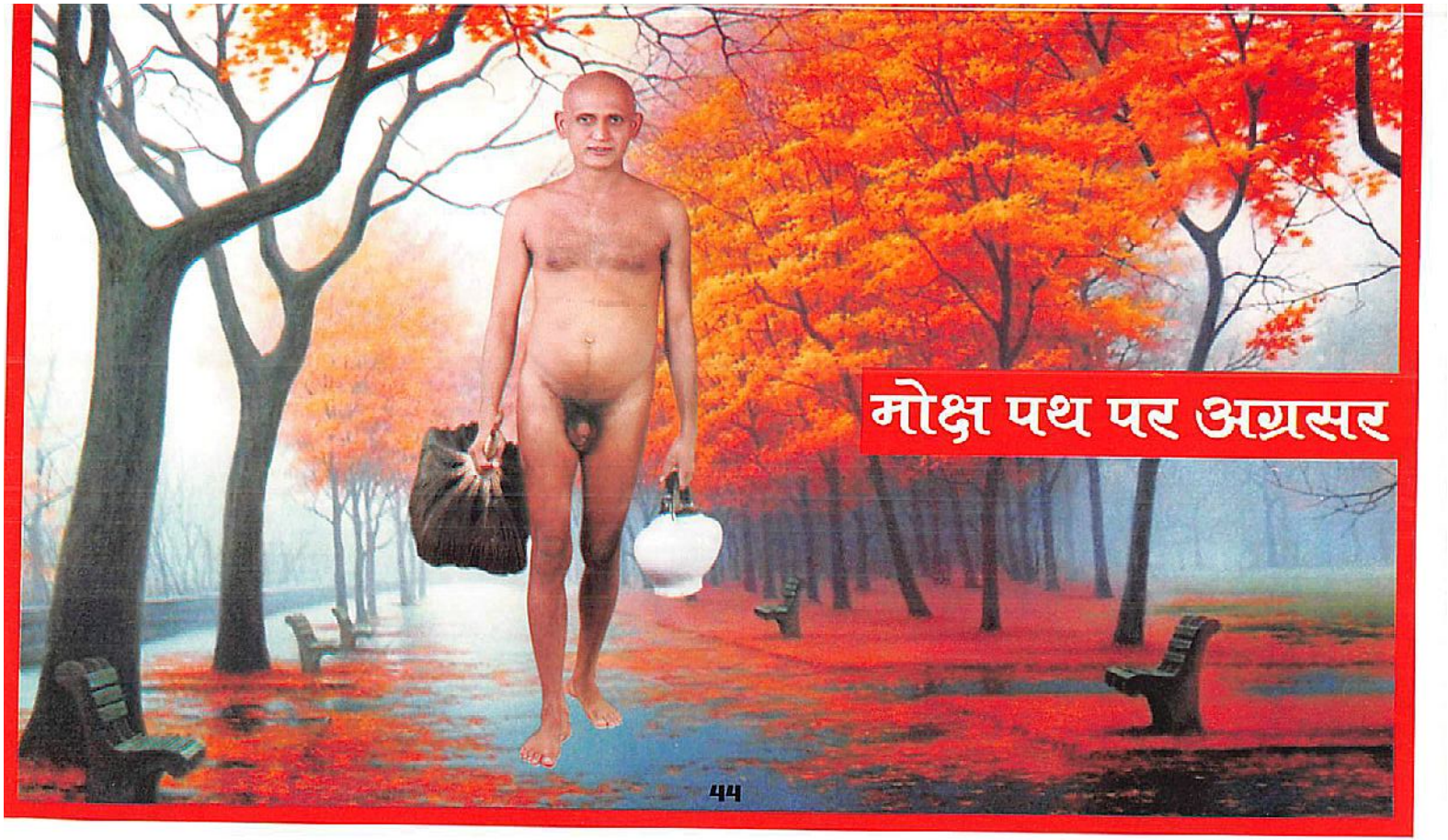
मोक्ष पथ पर अग्रसर
44

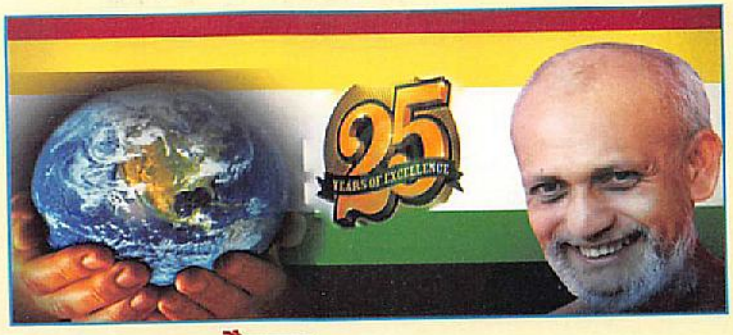

वैराग्य
जिसकी तीव्र
उसने किसकी है मानी

कल्याण
छोड़ उसने
कोई बात न जानी ।

आज
की नहीं है
ये बात पुरानी ।

उन्नीस
सौ उनासी में
ब्रह्मचर्य व्रत कि थी ठानी ।

श्री आदि
नाथ मंदिर
था ग्राम विरोंधा।

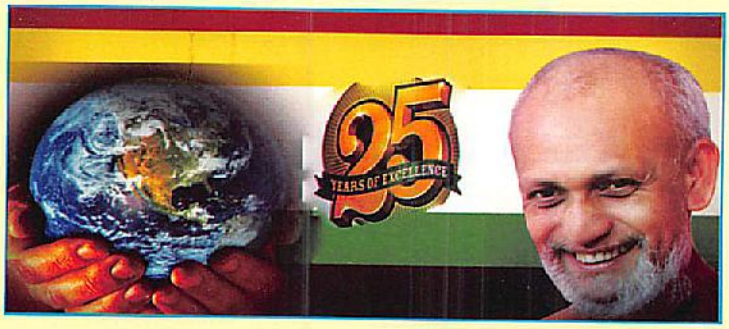

जाकर
वहीं स्वयं
किया ये काम अनोखा।

मिट्टी
को घड़ा बनने
को कुम्हार चाहिए।

उपादान
हो प्रबल
पर निमित्त चाहिए।

विमल
सागर जी
ससंघ धौलपुर आए।

निर्ग्रन्थ
मुनि दर्शन उन्नीस
सौ अठासी में पाए।

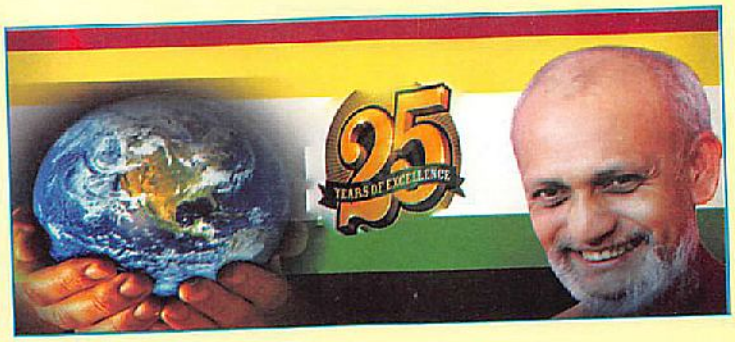

बीस
अप्रैल को ये
गृह त्याग कर चले।

मंजिल
की ओर मानो
कि कदम हैं अब बढ़े ।

श्रावकों
में ये किसी
से बात न करते ।

संकोची
थे बहुत किसी
से कुछ न ये कहते ।

संकोची
थे कितने तुम्हें
एक घटना सुनायें।

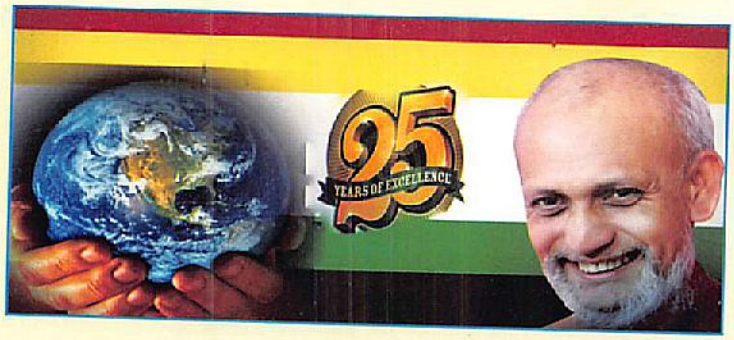

गृह
त्यागते ही क्या
हुआ एक बात बतायें।

विमल
सागर जी ससंघ
का विहार था।

सोनागिरी
सिद्ध क्षेत्र
का विचार था।

साथ में
चले रवि
कोई जानता न था।

श्रावकों
में इनको
कोई पहचानता न था।

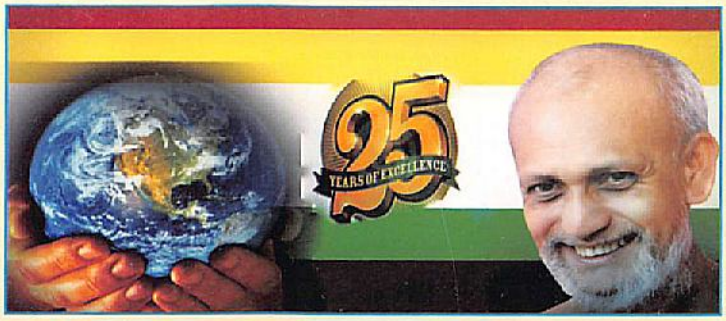

संकेत
भोजन के लिए
किसी से न गँवारा।

गुड़
चने पानी को
ले सप्ताह या गुजारा।

सिंहोनिया
जी क्षेत्र
मुरैना में है प्यारा।

देव
शांतिनाथ का
अतिशय बड़ा न्यारा।

यहाँ
भावना कल्याण
कि गुरु के समक्ष रखी।

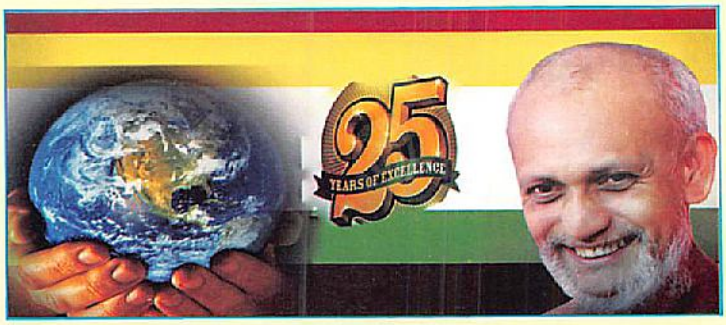

ब्रह्मचर्य
दीक्षा चौदह
मई अठासी को ग्रहण की।

दृढ़ता
विशुद्धता से
व्रत स्वीकार था किया ।

दीक्षा
कि भावनाओं
को प्रबल सदा किया ।

काम
से अपने सदा
ये काम रखते थे ।

कर्त्तव्य
अपने सब सदा
ही पूर्ण करते थे ।

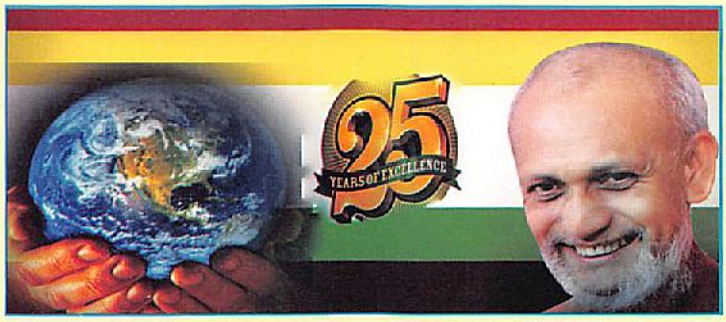

भगवान
का अभिषेक
पूजन नित्य करते थे ।

पुस्तकों
में ये सदा
तल्लीन रहते थे ।

तभी
राजाखेड़ा में
था महोत्सव बड़ा भारी ।

सुमति
सागर मय हुई
थी सभा सारी ।

पंच
कल्याणक आदि
स्वामी के ये कराए।

इक्कीस
मई प्रभु दीक्षा
को सब देखने आए।

आचार्य
श्री ने मंच
से पूछा क्या कोई है?

मोक्ष
पथ पर बढ़े
भव्यात्मा सोई है।

सुनकर
ये शब्द माहौल
सारा सहम सा गया।

भीड़
हजारों कि पर
सन्नाटा छा गया ।

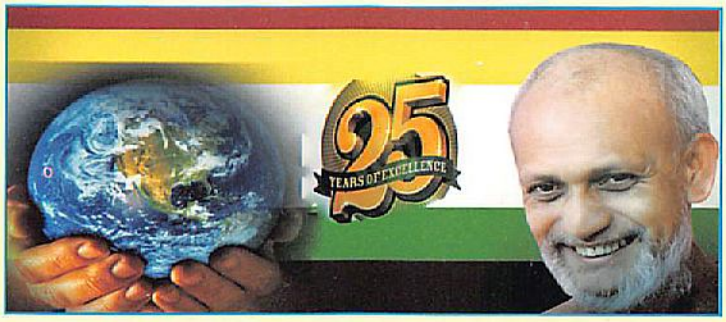

एक
आवाज ने तभी
सन्नाटे को चीरा।

उस
पथ पे चलूँगा
मैं चले जिस पे थे वीरा।

जनता
ने चारों ओर
अपनी दृष्टि घुमायी।

आवाज
ये प्यारी सी
दी है किसकी सुनायी।

जनता
थी अचंभित
देख उसकी छवि को।

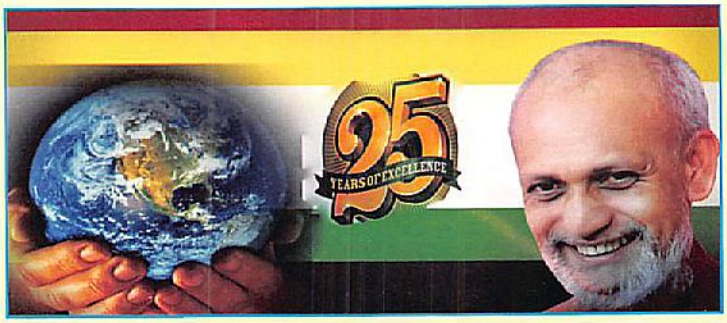

भोले -
भाले चेहरे
वाले नन्हें रवि को।

जनता
में तभी सारी
हाहाकार था मचा।

छोटा
सा बालक कौन है?
विधि ने है क्या रचा?

आवाज
गूंजी चारों ओर
बालक को समझाओ।

जाने
नहीं क्या कर
रहा लौटा के ले आओ।

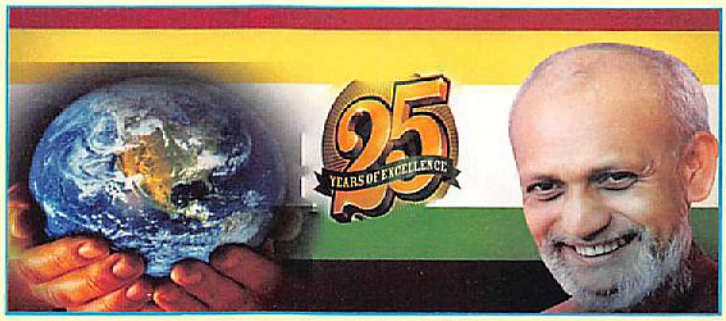

आश्चर्य
में मुनिवर भी
ये बालक को देखकर।

भोले -
भाले तेज युक्त
चेहरे को देखकर।

कह
उठे बालक तो
ये साहसी गंभीर है।

दिखता
है छोटा पर
ये धुरंधर है वीर है।

सामान्य
नहीं ओज ये
बालक का बताता।

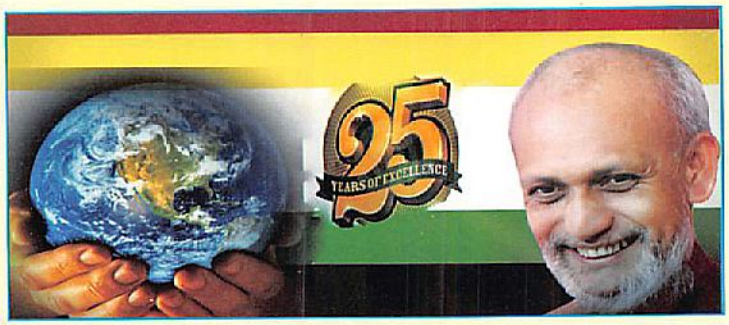

आने
वाले समय
का होगा ये निर्माता।

आचार्य
श्री ने जनता
को था शांत तब किया।

बालक
से पूछा तुमने
क्या संकल्प है लिया।

निर्भीक
हो बोला मुनि
दीक्षा मैं धरूँगा।

अष्ट
कर्मों को मैं
अपने नष्ट करूँगा।

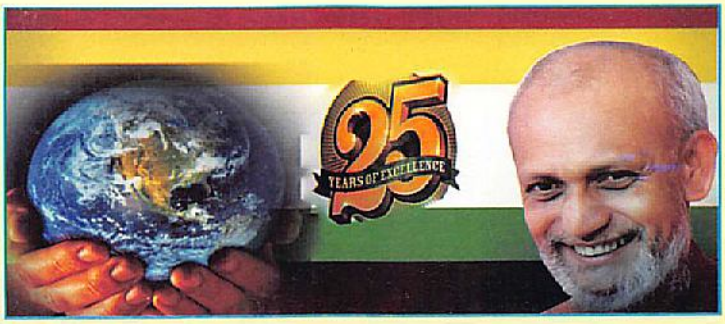

मोक्ष
के पथ पर
कदम एक और बढ़ाया।

दो प्रतिमा
व्रत स्वीकार
कर गौरव को बढ़ाया।

जयकारों
से गूंजा बड़ा
सुन्दर था नजारा।

रुकता
नहीं वैरागी
ये वृत्तांत था सारा।

समय
के साथ धीरे -
धीरे चलते ही गए।

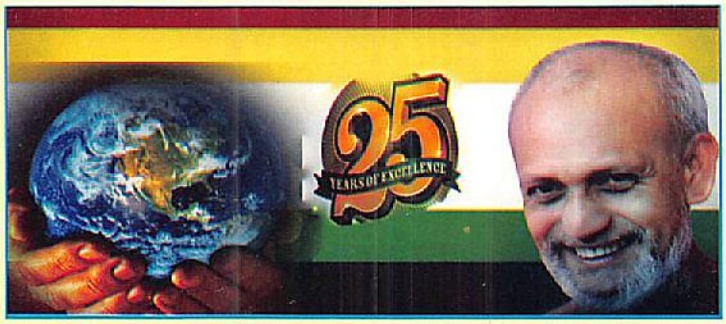

मंजिल
कि ओर नित्य
कदम बढ़ते ही गए।

ग्राम
बरही का तब
बदला था नजारा।

निर्ग्रन्थ
मुनि संघ जब
वहाँ था पधारा।

मुनि
त्रय जुलाई
अठासी में विराजमान थे।

बाहुबली
अजित सागर
विराग नाम थे।

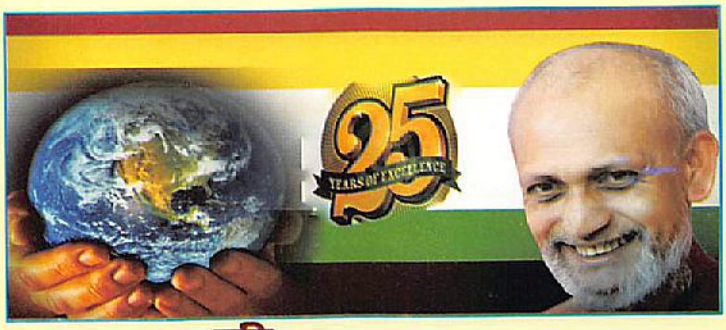

मुनि
विराग सागर जी
से गहरा लगाव था।

दिनेश
का उनके प्रति
अच्छा झुकाव था।

प्रतिमा
के लिए सात
प्रार्थना नितांत थी।

योग्यता
से उनकी जो
सहज स्वीकार थी।

दिनाँक
थी सत्ताईस
माह जुलाई था प्यारा।

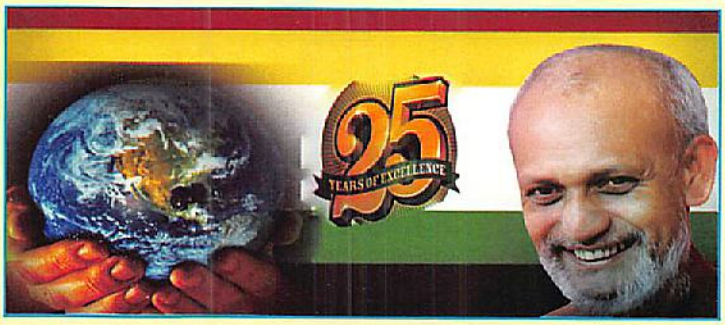

कल्याण
को आतम के
सप्त प्रतिमा व्रत धारा।

अध्ययन व
साधना के साथ
था समय बीता।

वैराग्य
भावनाओं से
स्वयं को था सींचा।

तीस
चालीस गाथा
दिन में याद कर लेते ।

सिद्धांत
को ये शीघ्र
सहज ही समझ लेते ।

क्षुल्लक दीक्षा

क्षुल्लक दीक्षा

क्षुल्लक
दीक्षा की खबर
फैली थी चहुँ ओर।

उत्सुक
थे सभी लोग
था दीक्षा का बहुत जोर।

बिनौली
भिन्न स्थानों पे
निकलने थी लगी।

भोली
सी छवि आँखों
में उतरने थी लगी।

सोलह
नवंबर "बासो"
में था शुभ दिवस आया।

क्षुल्लक
जी बन जिनेंद्र
सागर नाम था पाया।

उत्कृष्ट
चर्या का सदा
पालन थे ये करते।

संयम
व्रतों में सावधान
थे सदा रहते।

यम
लिया नाखून
बालों को न काटेंगे।

इनको
हमेशा अपने
हाथों से उखाड़ेंगे।

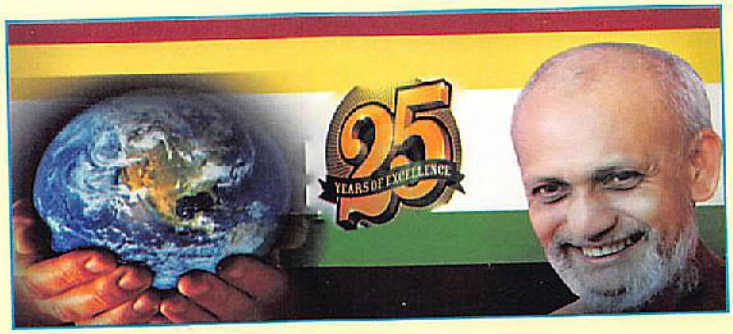

परिग्रह
कोई ज्यादा
साथ में नहीं रहता।

एक
डायरी पुस्तक
कलम था हाथ में रहता।

घुंघराले
काले बाल
आँखें रहती थी झुकीं।

कर
दर्श को कुछ
क्षण तो दृष्टि रहती थी रुकी।

अध्ययन
में अपने ये
सदा तल्लीन थे रहते ।

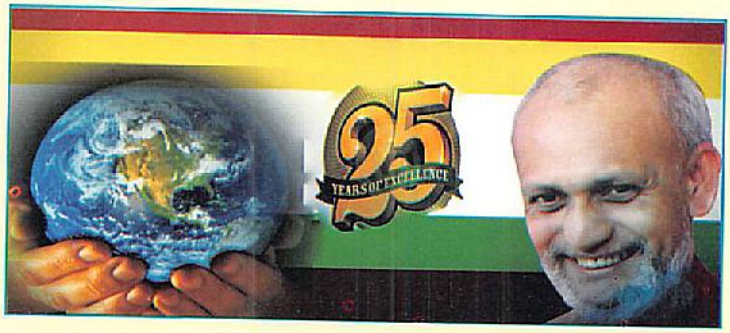

परिचय
से दूर थे किसी
से कुछ नहीं कहते।

छोटे से
दुल्लक नाम से
पहचाने थे जाते।

लख
इनकी छवि को
सभी के जुड़ गए नाते ।

भीड़
में रहके भी
ये सबसे अलिप्त थे।

बाहर
ही था संसार
पर अंदर से रिक्त थे।

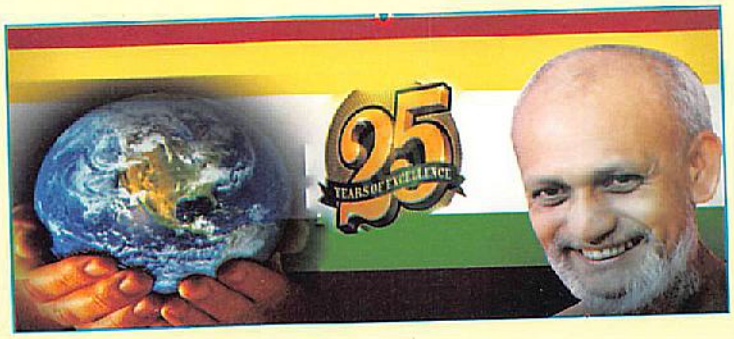

कई
शास्त्रों को कुछ
दिन में ही कंठस्थ था किया।

तीव्र
प्रज्ञा से अचंभित
सबको था किया।

मुनि दीक्षा

मुनि दीक्षा

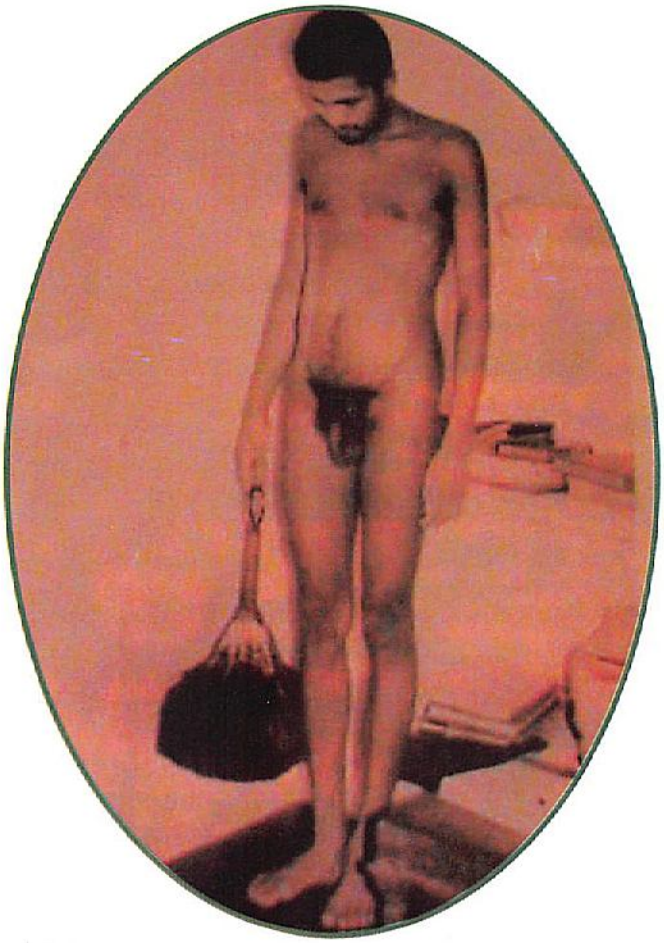

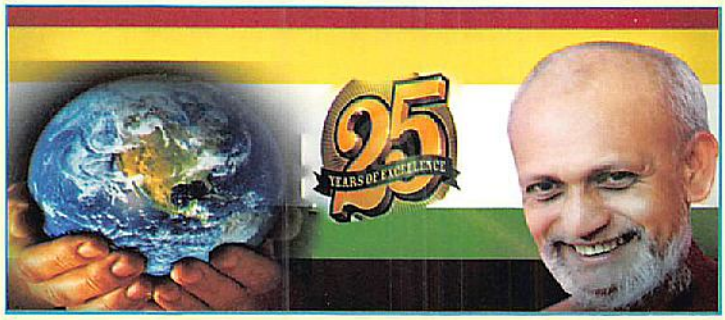

जिसके
लिए प्रतीक्षा थी
समय वो आ गया।

परमेष्ठी
होने का स्वयं
अवसर था आ गया।

निर्ग्रन्थ
दिगंबर मुनि
होने की भावना।

थी पाँच
महाव्रतों को
धारने की कामना।

ग्यारह
अक्टूबर उन्नीस
सौ नवासी शुभ दिवस।

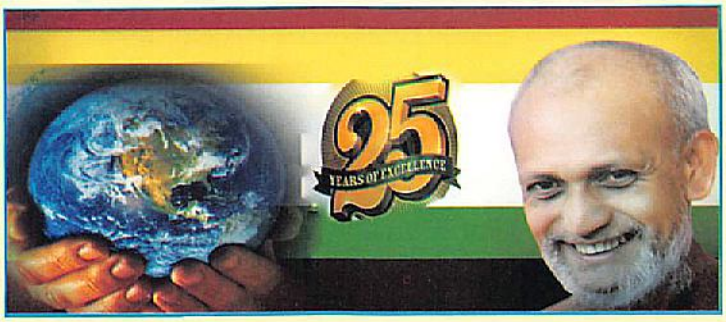

नजारा
देखने को थी
अँखियाँ रहीं तरस।

सहस्रों
लोगों कि
उपस्थिति वहाँ हुई।

भिण्ड
में नसिया जी
पे घड़ियाँ ठहर गई।

जयकारों
से गूंजा था
स्थान वो सारा।

मुनि
बनके निर्णय
सागर नाम पाया था प्यारा।

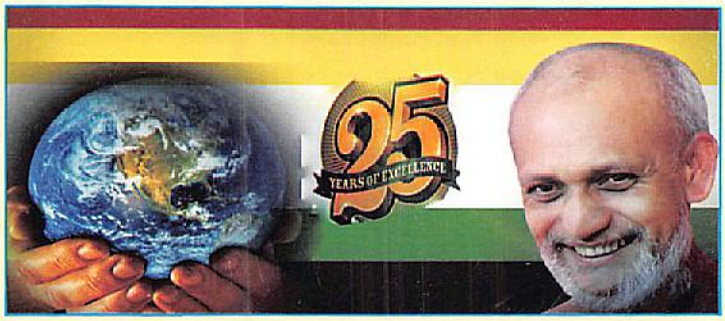

अध्ययन
व ध्यान में
सदा लीन वे रहते।

बाईस
परीषहों को
समता से ही सहते।

मुस्कान
चेहरे पे सदा
ही रहती थी स्मित।

लख
चर्या ज्ञान
साधना सब लोग थे विस्मित।

छोटी सी
उम्र में ही
मुनि पद को था पाया।

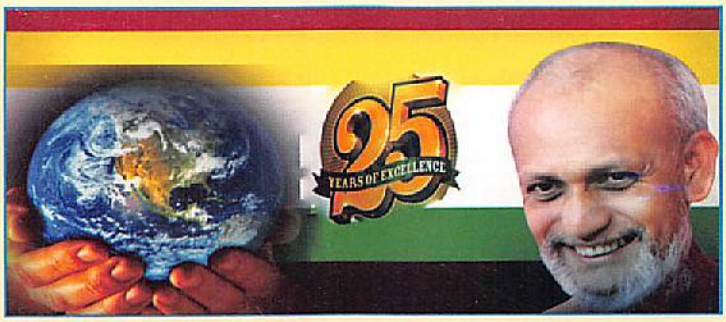

आचरण
से अपने
पद का मान बढ़ाया।

भिण्ड
में ही पहला
चातुर्मास था हुआ।

क्षीरोदधि
ने मानो
प्यासी भूमि को छुआ।

विहार
साधना का
क्रम चलता ही रहा।

दूसरा
चौमास टीकम
गढ़ में तब हुआ।

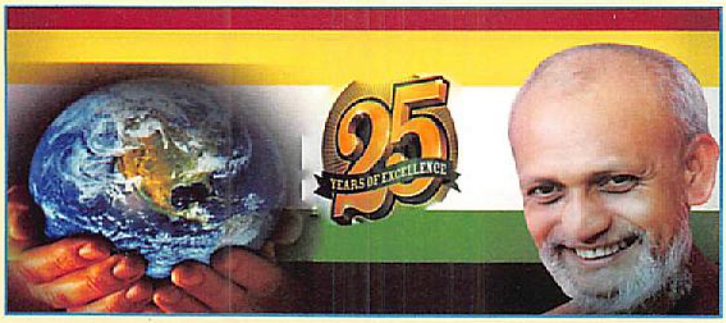

प्रभावना
चहुँ ओर
महती थी धर्म की।

उपाधि
पाई तब
"युवा हृदय सम्राट" की।

षट्काय
जीवों पे ये
करुणा पालकर रहते।

साधना
के पथ पे
निरंतर ही ये बढ़ते।

इक्यानवें
का वर्षा-
योग श्रेयांसगिरी था ।

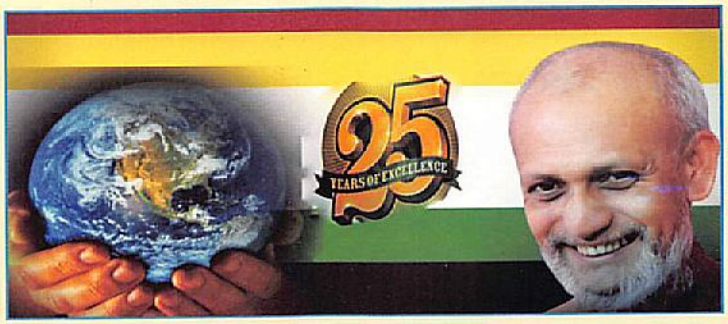

हौंसला
बुलन्द इन
का हिम के गिरी सा।

पहाड़
पर अकेले
ही गुफा में थे रहते।

आहार
करने एक
बार आते थे नीचे।

देवाधिदेव
श्री वृषभ
के पादमूल में।

रहे
ध्यान लीन होने
अलग कर्म धूल से।

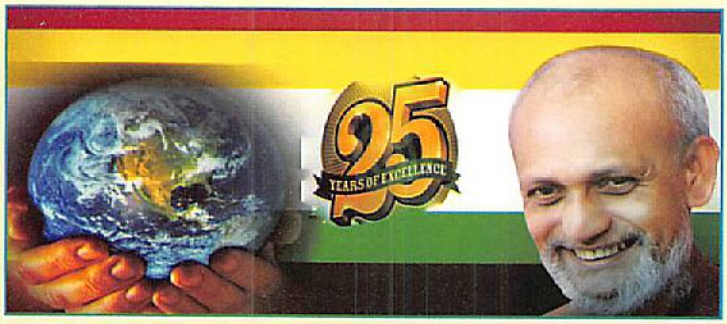

सिंहादि
जंगली जानवरों
का ही स्थान था।

पर
भय का तो
हृदय में तनिक ना निवास था।

साधना
और ध्यान
के प्रभाव को पाकर।

विषैले
सर्प बिच्छू
शांत बैठते आकर।

आकाश
में तारों समा
गुण नंत के आगर।

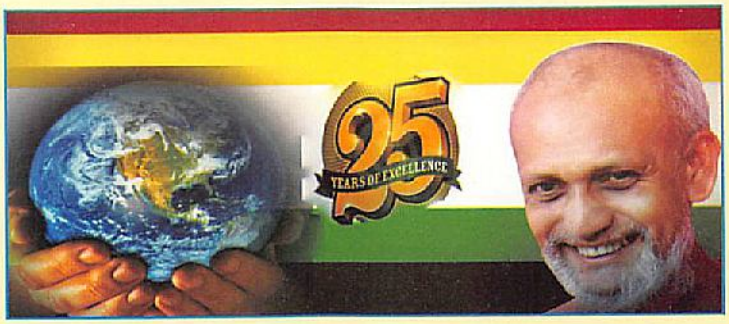

तब सब
सहज ही कह
उठे जय नंत "गुण सागर"।

रुकता
न वक्त
धीरे धीरे बीतता रहा।

चातुर्मासों
का ये क्रम
चलता ही रहा।

बानवें
में वर्षा
योग द्रोणगिरी था।

तिरानवे
का वर्षा -
योग श्रेयांसगिरी था।

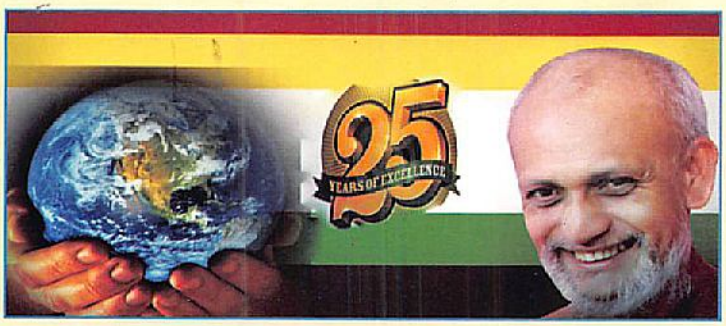

चौरानवें
में मोरा जी
में धूम मचाई।

साधना
प्रभावना कि
थी लहर आई।

ललितपुर
में वर्षा -
योग पिचानवें में था।

सम्यक्
दिशा को पाने
का उत्साह सब में था।

धर्म
के प्रति लहर
एक तेज थी आई।

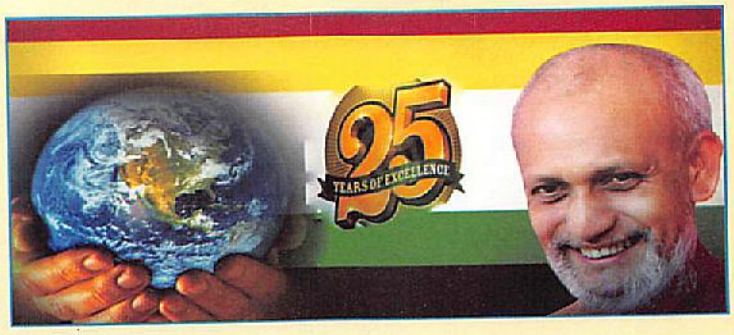

बालक
हो वृद्ध या
युवा उमंग थी छाई।

अपनी
भक्ति से
दमोह ने बांध था लिया।

तब
छियानवें का
चातुर्मास इन्हीं को था मिला।

भक्ति
कि शक्ति का
कहीं होता नहीं छोर ।

निर्णय
सागर शब्द
गूंजते थे चहुँ ओर।

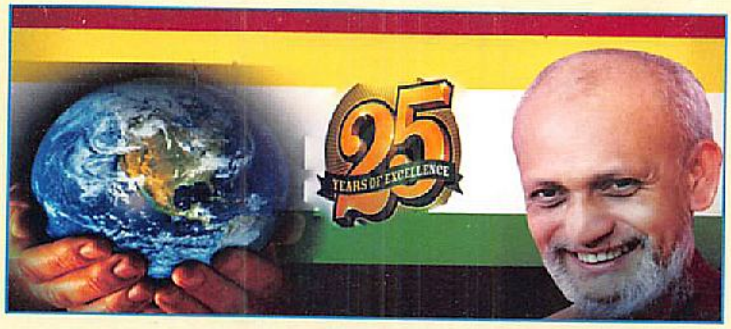

अध्यात्म
देख "आध्यात्मिक
संत" कह के पुकारा।

"बाल
योगी" कि
साधना का अजब नजारा।

साधु
तो बहता पानी
है रुकते कहीं नहीं।

निधियाँ
अध्यात्म कि ये
बाँटते हैं हर कहीं।

इक्कीस
जुलाई को
गढ़ाकोटा में स्थापना थी की।

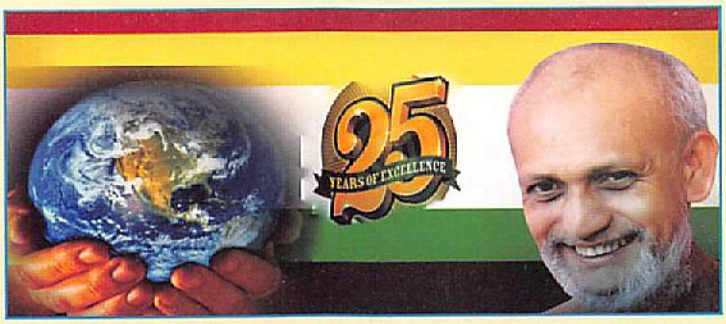

धर्म
उन्मुख होने
कि प्रस्तावना ही थी।

धर्म
के सद्मार्ग
से सबको ही था जोड़ा।

मिथ्यात्व
भ्रम को सभी
के आपने तोड़ा।

दीवानगी
के साथ सब
भक्त तब दिखते।

साठ
सत्तर चौके
जब रोज थे लगते।

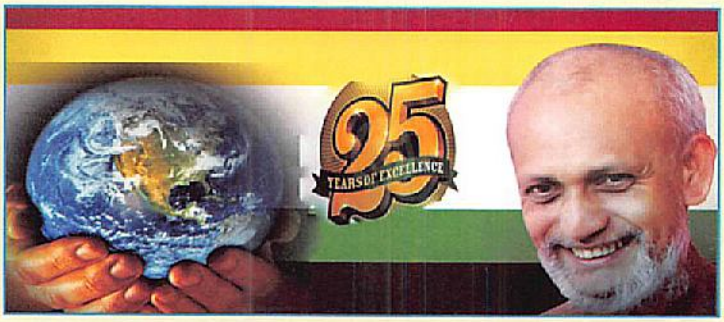

दमोह
के निकट
ही कुंडलपुर गाँव में।

बड़े
बाबा श्री
आदिनाथ की छाँव में।

छवि
देख कर
हुए मोहित सभी भक्त।

मिल
सभी कह उठे
"युवा मनीषी" उस वक्त।

वर्षा
योग हेतु चले
फिर उन्हीं राहों पर।

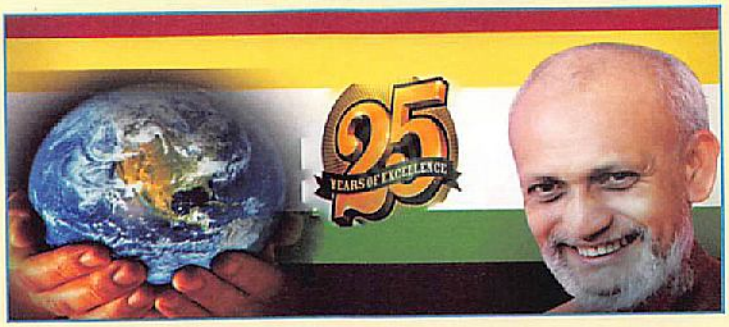

अठानवें
में पुनः श्रेयांस
गिरी के पहाड़ों पर।

तपः
स्थली यह
गुरुदेव कि बन गई।

साधना
शिखर को
उनकी यहाँ छू गई।

इक्कीस
गुफाओं कि
खोज वहाँ करी थी।

जप
तप साधना
सोने से भी खरी थी।

बीना
में भी धर्म
कि ध्वजा फहरायी।

ज्ञान
कि लहर
जन जन में थी छाई।

ज्ञान
में उपयोग
निरंतर ही चलता रहा।

अभीक्ष्ण
ज्ञानोपयोगी तब
नाम सार्थक रहा।

उतार
और चढ़ाव
ही जीवन का नाम है।

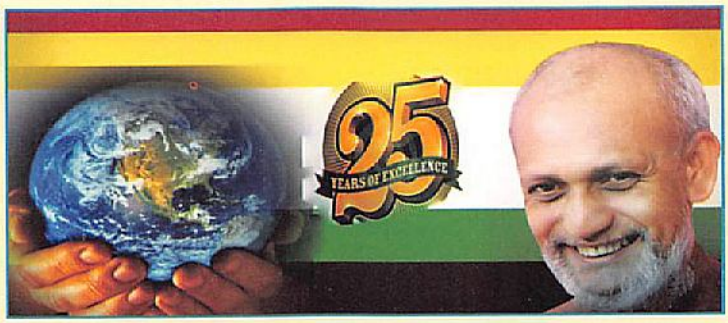

प्रातः काल
होता जहाँ
होती वहाँ शाम है।

अनदेखा
से मोड़
एक जीवन में आएगा।

सोचा
न किसी ने
कभी वक्त ये दिखाएगा।

वक्त
कि चुनौती
सामने थी खड़ी।

संघर्ष
कि कसौटी
रही थी बड़ी।

साहस
और पराक्रम
को प्रणाम करते हैं।

सहनशीलता
को आपकी
नमस्कार करते हैं।

आंधी
और तूफान
से टकराव कर निकले।

अब
ये कदम
फिरोजाबाद को चले।

विधि
को जाने न
थी अब किसकी प्रतीक्षा।

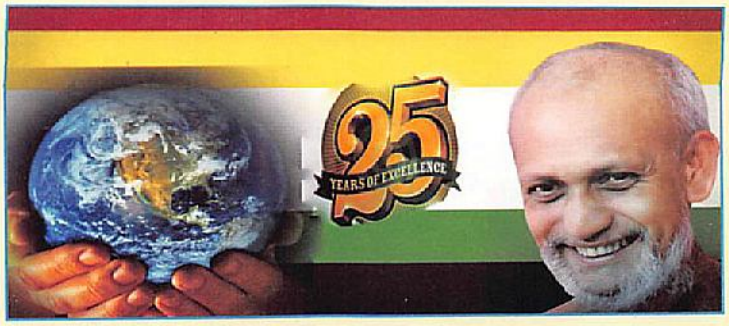

अभी
भी पूर्ण न
हुई प्रकृति कि परीक्षा।

डायबिटीज
और पीलिया
ने साथ में घेरा।

आशा
नहीं थी देख
सके कल का सवेरा।

पर
भक्ति वैय्यावृत्ति
का ये रंग था दमका।

हो
प्रखर उद्दीप्त
भास्कर पुनः चमका।

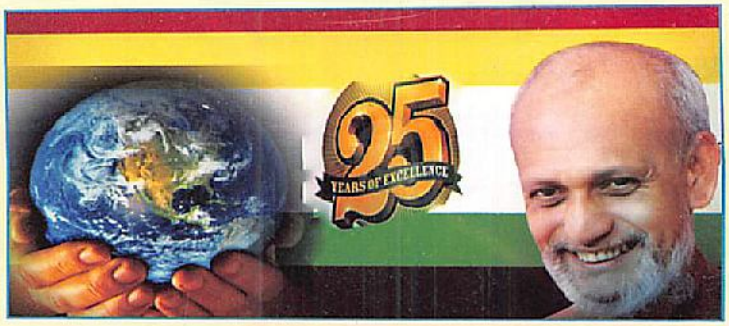

घनघोर
मेघ कर्म के
छाए थे छट गए।

समता
से हार मान
कर्म पीछे हट गए।

निन्यानवे
का चौमास
फिरोजाबाद में हुआ।

सरल
व्यक्तित्व ने
सभी के हृदय को छुआ।

बच्चा -
बच्चा भी हुआ
था धर्म से रंजित।

जिनदेव
कि वाणी
हुई चहुँ ओर ही गुंजित।

चौमासा
दो हजार का
टूण्डला में था किया।

गुरुदेव
का तप लख
"तपोनिधि" बना दिया।

भारत
की राजधानी
दिल्ली प्रदेश में।

विद्यानंद
जी के दर्शन
किए इस ही प्रवेश में।

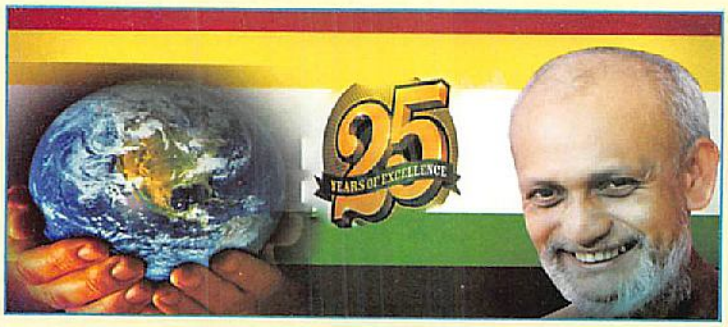

दो
हजार एक
दिल्ली ग्रीन पार्क में।

चातुर्मास
हुआ पार्श्वनाथ
चरण में।

ज्ञान
सूर्य आत्म
वासी इंद्रिय जेता।

कर
जोड़ सब
बोले जय "उपसर्ग विजेता"।

उपाध्यायपद

उपाध्यायपद

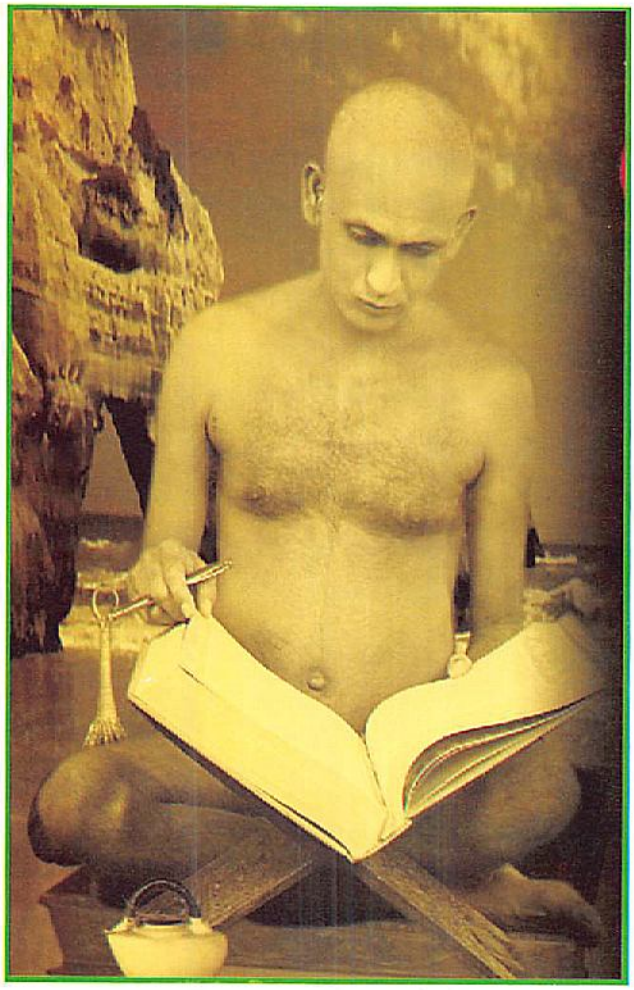

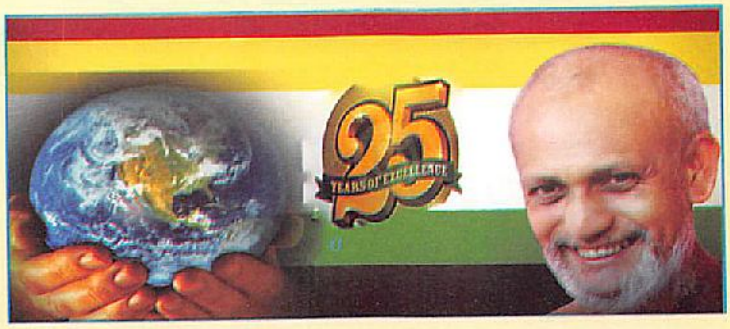

आचार्य
विद्यानंद जी ने
आज्ञा दी इक बार।

उपाध्याय
पद को
आप कीजिये स्वीकार।

योग्यता
से पूर्ण
ज्ञान कि असीम धार।

पाठक
पद का
सम्हालियेगा आप भार।

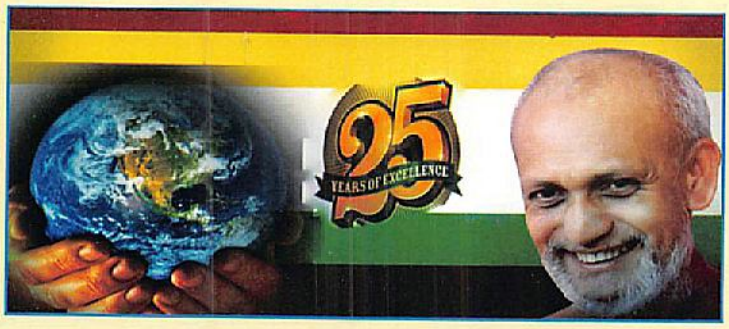

दो
हजार दो
दिल्ली विश्वास नगर में।

एक
मोड़ था आया
मुनिवर कि डगर में।

बसंत
पंचमी तिथि
जनता थी अविछिन्न।

इतिहास
रच गया
सतह फरवरी के दिन।

मुनि
को आज्ञा
रूप में दिया था उपहार।

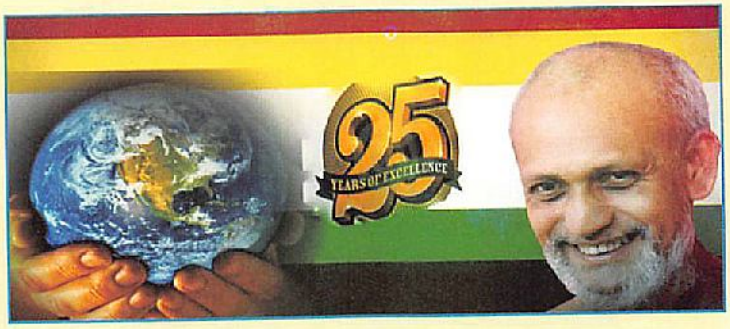

मुनि
शीश पे किए
पाठक पद के संस्कार।

मेरठ
नगर में था
अबकी बार चातुर्मास।

दो
हजार दो बना
तब सबके लिए खास।

जिनदेव
शासन की ध्वज
ने आकाश को चूमा।

जिन
धर्म चक्र
तीव्रता से और भी घूमा।

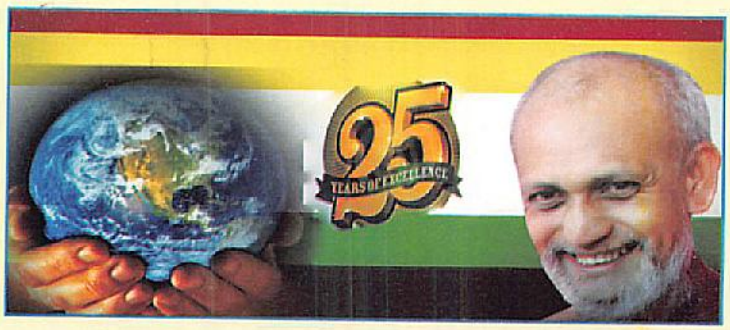

जन -
जन के मुख
से एक ही आवाज थी आई ।

"वात्सल्य
निधि" इनसे
बढ़ और कौन है भाई।

ज्ञान
गंगा का
सभी ने लाभ था लिया।

गुरुवाणी
ने हृदयों का
अभिषेक था किया।

मेरठ
को मिला
अवसर अभूतपूर्व था।

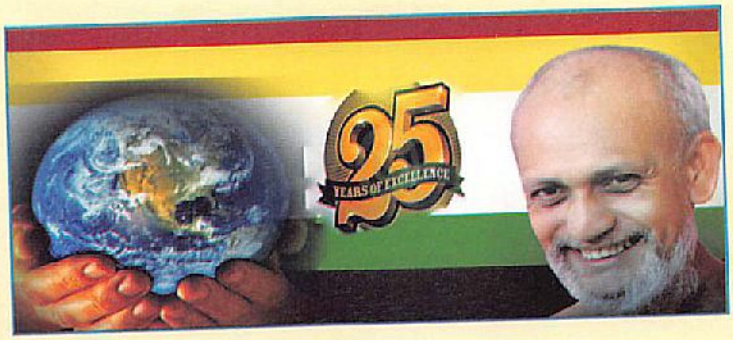

दो
हजार तीन
का वर्षायोग अपूर्व था।

ज्ञान
रश्मियों से
अंधकार मिटाया।

"ज्ञान
दिवाकर" कि
मिली पुण्य से छाया।

सरधना
में भक्तों
के साक्षात् वीर से।

साधना
के पथ पे
सदा चलते धीर से।

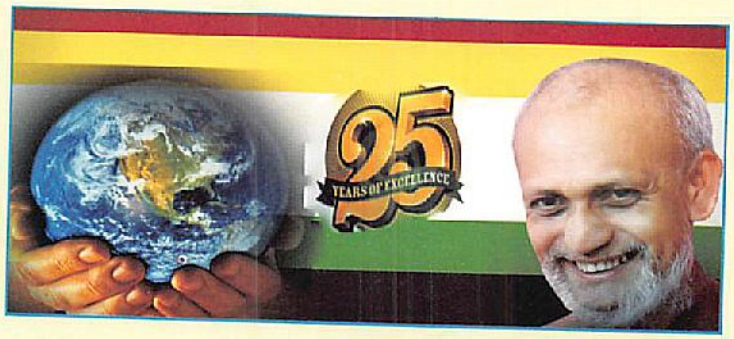

निर्वाण
के श्रम में
निरंतर रत हैं ये रहते।

"श्रमण
शिरोमणि" इनको
लोग तब कहते।

दिल्ली
में पुनः वापसी
सन् दो हजार चार।

कृष्णा
नगर में
किया चौमास का विचार।

वात्सल्य
का सिंधु
जन - जन में बहाया।

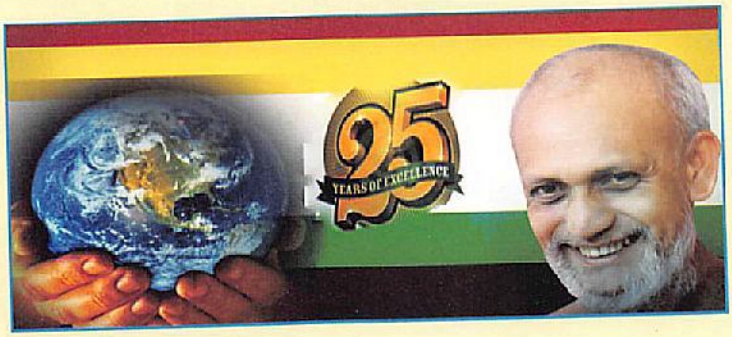

"वात्सल्य
रत्नाकर" का
जयकारा लगाया।

दो
हजार पाँच
में हुआ था चौमास।

शौरीपुर
बटेश्वर में
रहा तब निवास।

देव
अजितनाथ जी
का अतिशय महा।

जन्म
भूमि नेमि
नाथ कि इसे कहा।

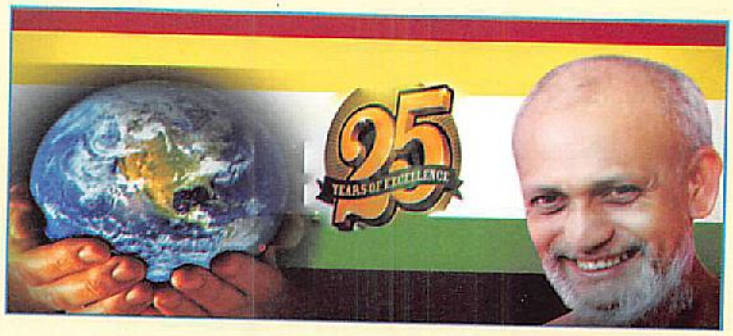

गुफा
में बैठकर
की निरंतर साधना।

श्री
अजित नाथ
स्वामी कि आराधना।

करके
विहार क्षेत्र से
पहुँचे थे शमशाबाद।

हो
गई वहाँ पे
एक अनसुनी सी बात।

गुरुवर
को घेर खड़े
थे सब भक्त हो निराश।

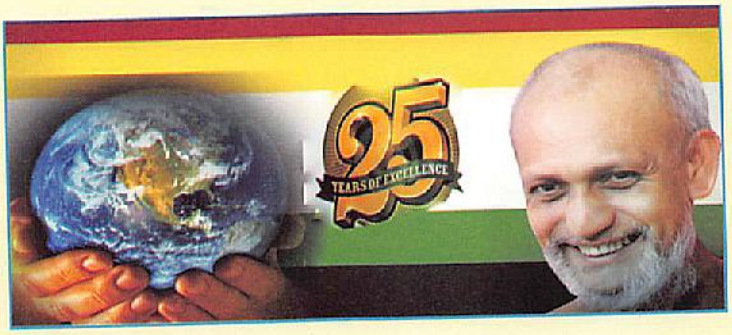

ब्लड
प्रैशर रह गया
जब पच्चीस और पचास।

डॉक्टर
ने जाँच कि
व बोले देखकर सूरत।

संभव
नहीं कि देख
पाएँ उगता हुआ सूरज।

डॉक्टर
से बोले औषधि
सेवन न करूँगा।

उगता
हुआ सूरज
भी अवश्य मैं देखूँगा।

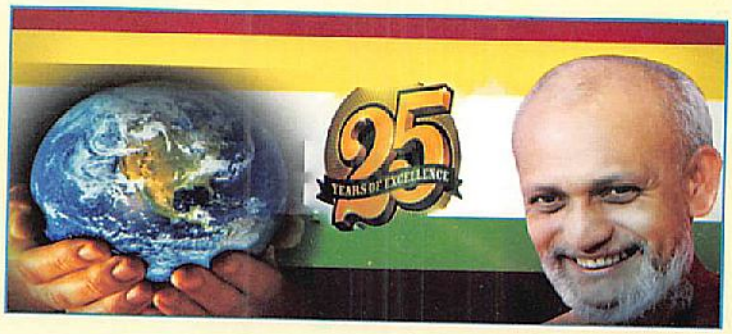

ईश्वर
कृपा से ढल
गयी कर्मो कि काली शाम।

आश्चर्य
चकित हो डॉक्टर
बोले लौह पुरुष को प्रणाम।

सन् दो
हजार छः में
तिजारा क्षेत्र पर।

चातुर्मास
गुरु का हुआ
चंदा कि देहरी पर।

साधना
के गगन
को स्पर्श कर देखा।

"साधना
के शिखर
पुरुष" कह खींच दी रेखा।

निर्वाण
स्थली श्री
जंबू स्वामी की।

इसके
बाद स्थापना
गुरु ने मथुरा में की।

धर्म
रुपी प्राण थे
लोगों को मिल गए।

मरुभूमि
में भी मानों
धर्म पुष्प खिल गए।

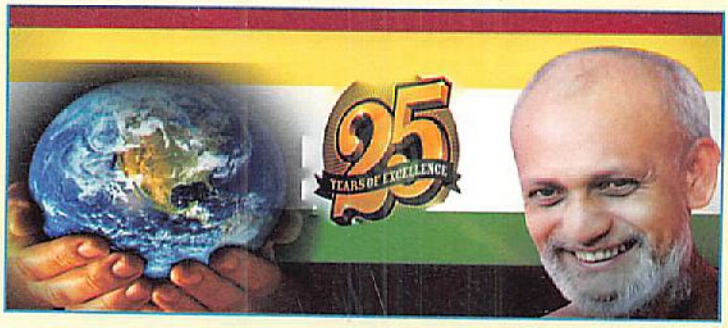

देहरा
तिजारा में
पुनः गुरुवर का आगमन।

चौमास
दो हजार आठ
में खिला सभी का मन।

एलाचार्य पद

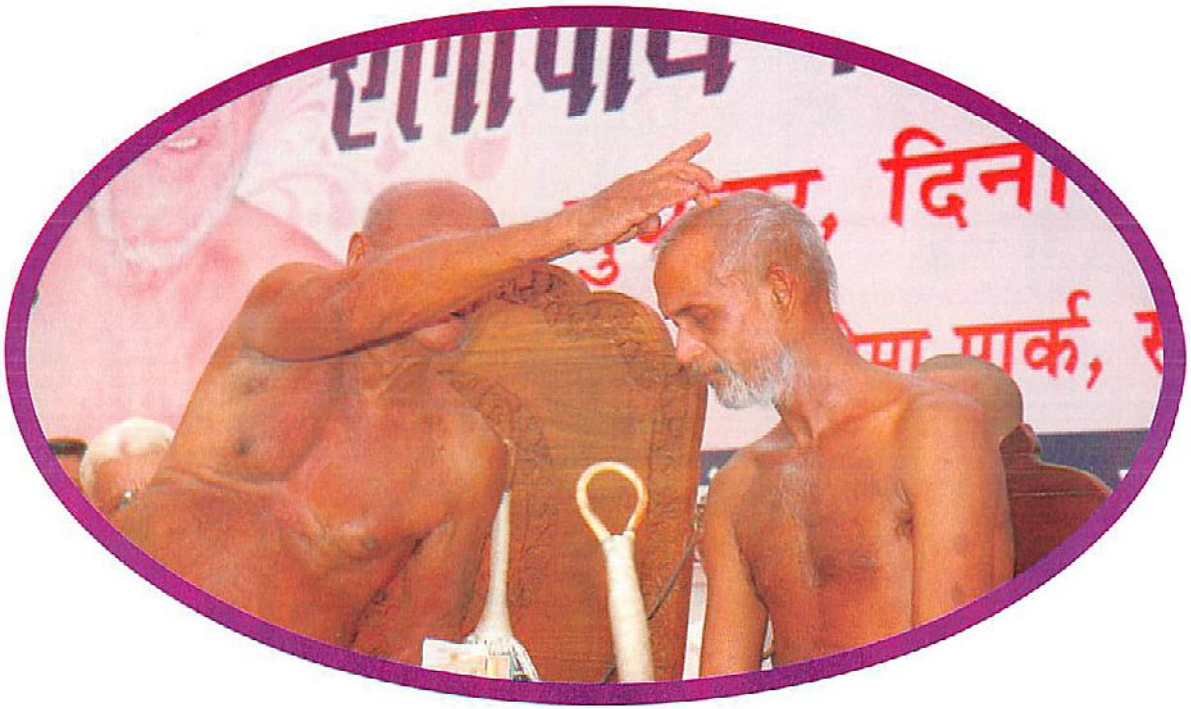

विद्यानंद
गुरु के
दर्श कि चाहत।

विहार
दिल्ली को
किया ले भक्ति कि आहट।

वात्सल्य
विद्यानंद गुरु
का असीम था।

शीश
पर आशीष
गुरु का निःसीम था।

सन्
दो हजार नौ
एक अप्रैल को बुधवार।

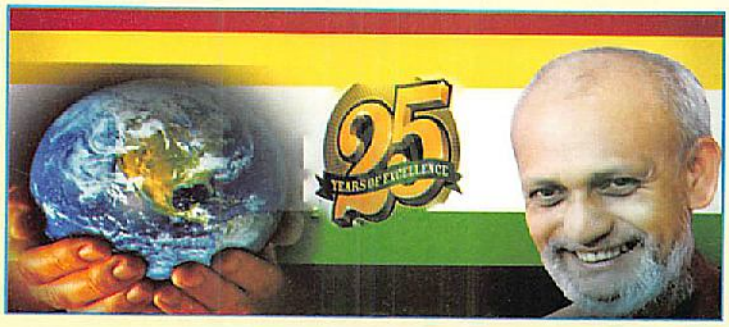

एलाचार्य
पद का गुरु
ने सौंप दिया भार।

अपार
जन समूह
में संस्कार था किया।

निर्णय
सागर को
वसुनंदी बना दिया।

मेरठ
नगर का तो
था बड़ा ही अहोभाग।

गुरुवर
श्री के चातुर्मास
का मिला सौभाग।

जम्बू
स्वामी तपोस्थली
वौलखेड़ा में चौमास।

दो
हजार दस को
राजस्थान का प्रवास।

"तीर्थोद्धारक"
परम हितैषी
संत आलीशान।

"अध्यात्म
सरोवर के
राजहंस" विश्व की हैं शान।

इसी
बीच में मचा
एक दिन हाहाकार।

एलाचार्य
श्री को एक
सौ आठ था बुखार।

टॉन्सिल
हुए गले में
कुछ ले नहीं पाते।

दर्द
था अत्यंत
तब बोल नहीं पाते।

ऐसे
में भी समता
धनी थे' आत्म ध्यान लीन।

तब
पीर वह भाग
गयी बन करके स्वयं दीन।

सुनसान
क्षेत्र में भी
स्वर धर्म का जगा।

सूनी
पहाड़ी पर भी
एक नगर सा था बसा।

वर्षायोग
सन् दो हजार
ग्यारह का मिला।

हस्तिनापुर
की वादियों में
था चमन खिला।

श्वाँसों
कि सरगम
में भी धर्म स्वर जगाया।

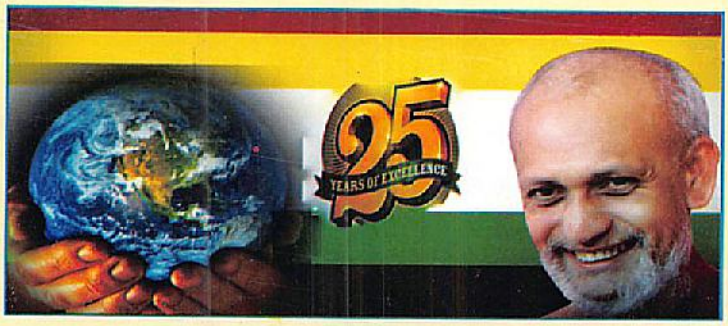

"धर्म
सम्राट" तब
भक्तों ने था पाया।

श्री
गुरुवर विद्यानंद
जी कि आँखों के तारे।

चातुर्मास
उपरांत
दिल्ली थे पधारे।

हुआ
यहाँ पर
जो घटना वो सुनायें।

साहस
मनोबल कि
तुम्हें एक बात बतायें।

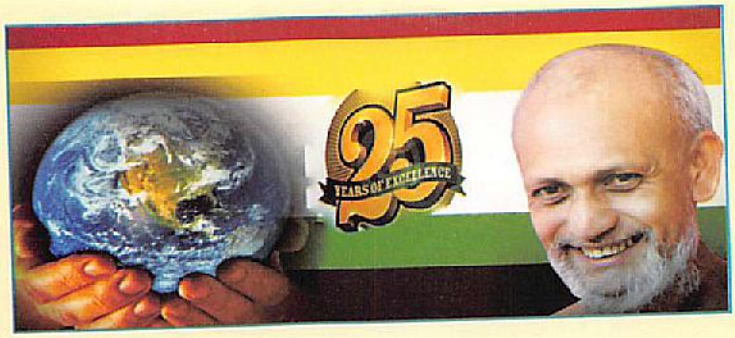

घनघोर
काले मेघ सम
कर्मों कि थी छाया।

रोग
ने गुरु देह
पर अधिकार जमाया।

पीड़ा
अवर्णनीय
तन में वेदना अपार।

गुरुवर
को देख तब
सभी कि बहती अश्रुधार।

हालत
गंभीर देख
सब भक्त थे चिंतित।

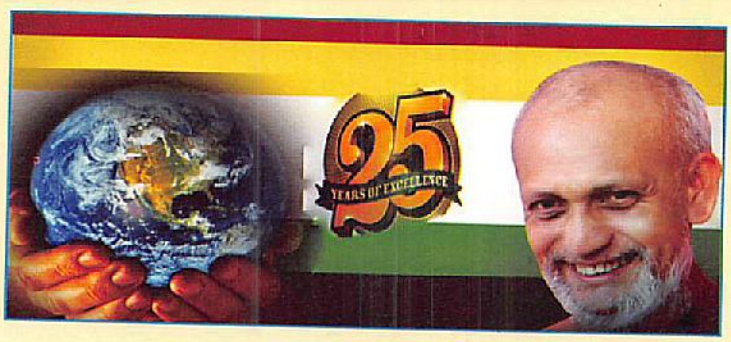

जग
का प्रखर रवि
हो जाए अस्त न किंचित्।

फिर
भी आत्म बल
था धर्म ध्यान निरंतर।

द्वादशानुप्रेक्षा
का पल -
पल चला चिंतन।

काले
मेघ सूर्य
से स्वयं ही हट गए।

पाप
कर्म मानो आ
चरणों में झुक गए।

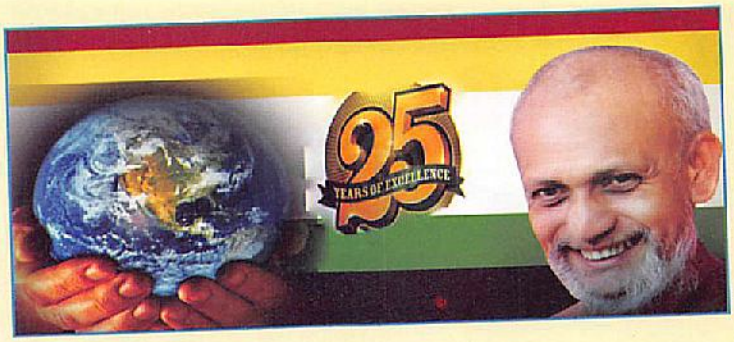

अनुष्ठान
पूजन विधान
सब ओर था हुआ।

यमराज
ने फिर एक
बार चरणों को था छुआ।

फिरोजाबाद
के लिए
किया था विहार।

दो
हजार बारह
के चौमास का विचार।

टूण्डला
में भक्तों कि
लगी बड़ी कतार।

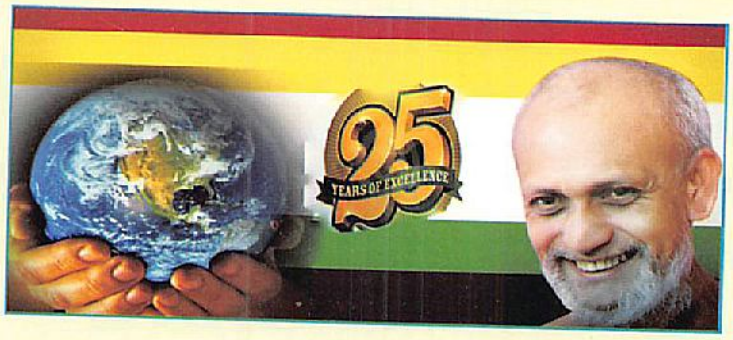

आगम
के ज्ञाता को
कह दिया "श्रुतावतार"।

प्रवेश
फिरोजाबाद में
हुआ था आलीशान।

सब
भक्त उठे बोल
मेरे लौट आए राम।

महावीर
स्वामी को
इनमें सभी निहारते।

भोले
बाबा कह
सभी थे पुकारते।

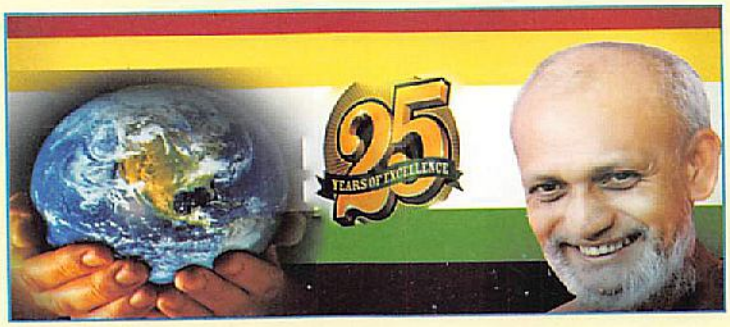

सहस्रों
श्रावक - श्राविकाओं
के किये संस्कार।

तब
"दीक्षा सम्राट"
कह लगायी जयकार।

अदम्य
बल और
साहस ने कर दिया कमाल।

"लौह पुरुष"
इस काल के
हो संत बेमिसाल।

दो
हजार तेरह
में तब दूण्डला आए।

"विश्व
गुरु" कह
तभी जयकार लगाए।

बिहार
कर दिल्ली
गुरुदेव थे आए।

ज्ञान
दिवाकर को
सब ने शीश झुकाए।

परम पूज्य गुरुदेव

परम पूज्य गुरुदेव

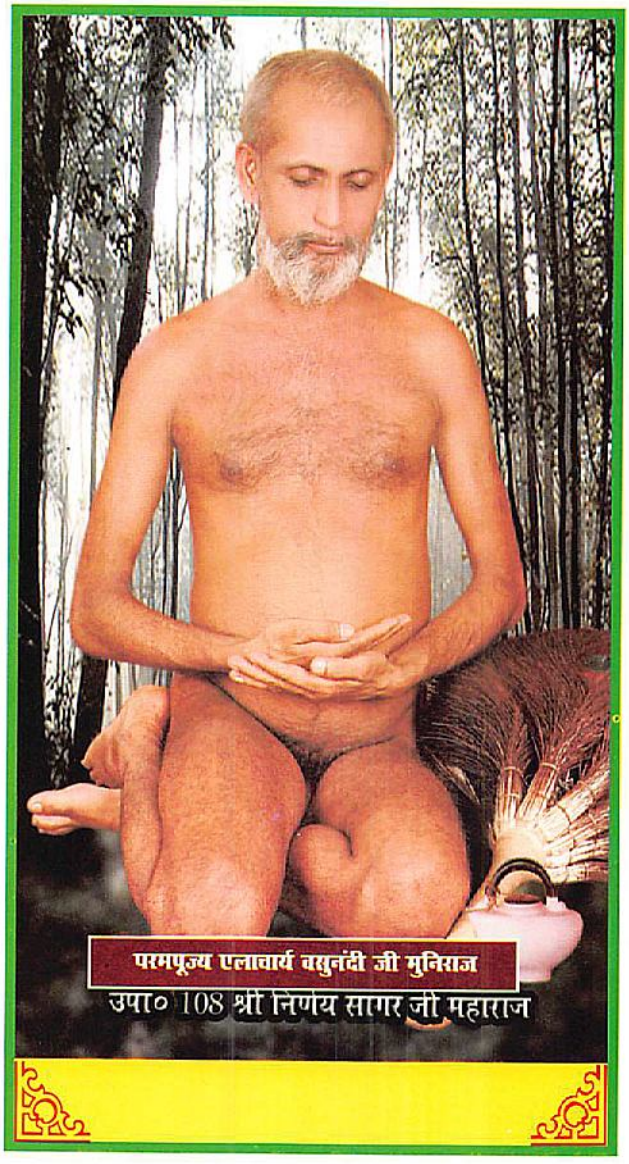

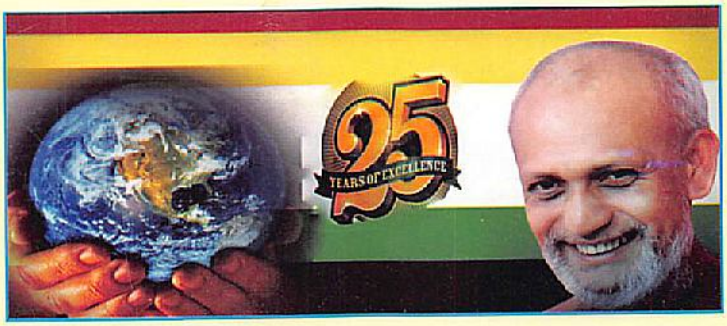

सिद्धांत
या अध्यात्म
सबके हैं प्रखर विद्वान्।

साधना
उत्कृष्ट ऐसे
संत हैं महान्।

वाचनाएँ
समय - समय
पर ग्रंथों की करते।

धवला
कषाय पाहुड़
महाबंधो स्वयं पढ़ते।

वर्षा
शीत, ग्रीष्म
में लगभग सत्तर करीं।

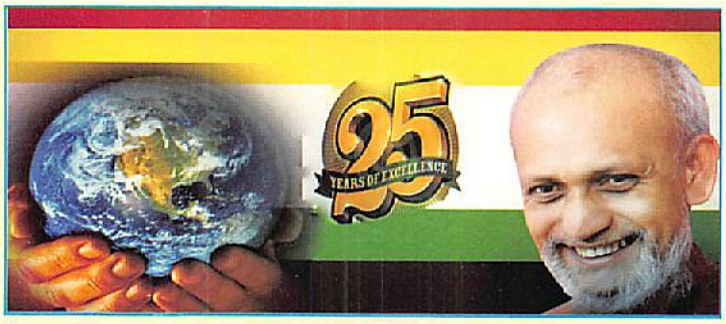

दो सौ -
तीन सौ ग्रंथो
की है वाचना करीं।

ज्ञान
सिंधु, आगम
ज्ञाता, प्रज्ञा के धनी।

दो
सौ पुस्तकें
संपादित व स्वयं रचीं।

भाषाओं
पर कई
इनका है अधिकार।

संस्कृत
प्राकृत, अंग्रेजी
अभी और है कतार।

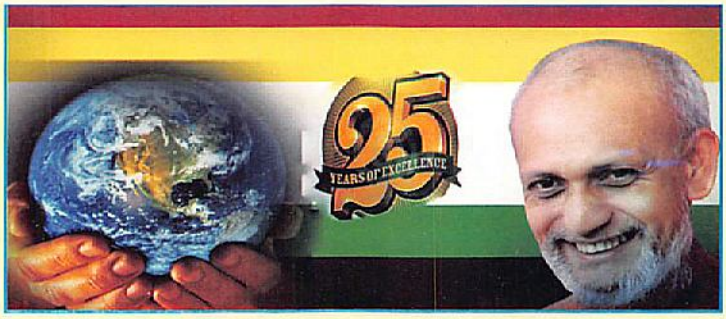

कन्नड़
गुजराती व
ब्राह्मीलिपी जानते।

उर्दू
अपभ्रंश व
बुंदेली जानते।

मुड़िया
स्टैनोग्राफी
आदि लिपियों के ज्ञाता।

पंजाबी
मराठी भी
इनके मन को है भाता।

तर्क
आगम युक्ति
सहित श्रेष्ठ हैं वक्ता।

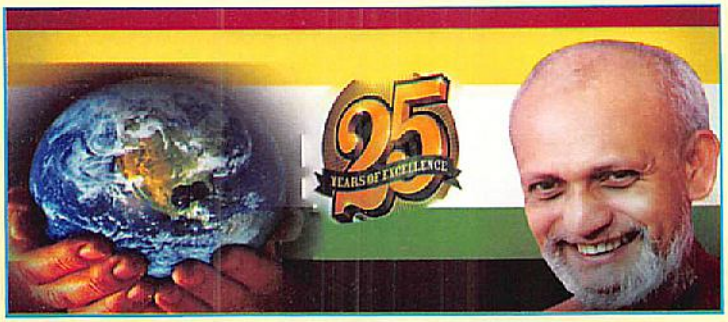

न्याय
पारगामी नय
के अधिवक्ता।

व्रत
उपवास भी
गुरु ने कई किए।

रसी
णमोकार व
पंचमी के व्रत किए।

कवल
चंद्रायण
अश्विनी रोहिणी व्रत।

समवशरण
पंच कल्याणक
सहस्रनाम व्रत।

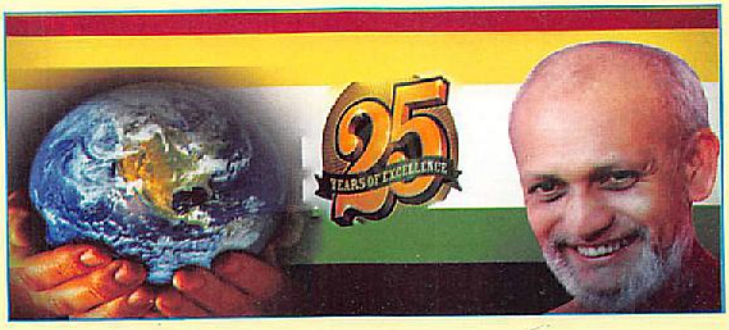

तत्त्वार्थ
सूत्र, भक्तामर
व कर्म दहन के।

व्रत
किए ज्ञान
पच्चीसी व चौंसठ ऋद्धि के।

लघु
सिंह निष्क्रीड़ित
व उत्कृष्ट ऊनोदर।

दिन
पे दिन करते
गए वे साधना बढ़कर।

व्रत
चारित्र शुद्धि
सर्व दोष परिहार।

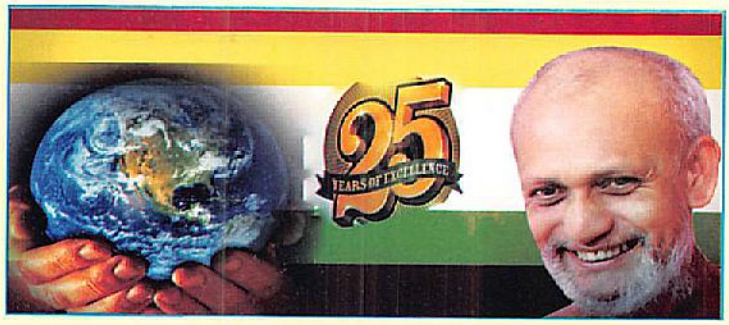

जिन
गुण संपति भी
किए कर्मो कि करने हार।

सिद्ध
चक्र, पंच
परमेष्ठी आदि व्रत किए।

व्रत
सहस्त्रों लोगों
को भी आपने दिए।

लगा
शिक्षण व साधना
शिविर संस्कार दिलाएँ।

कलशारोहण
शिलान्यास
वेदी शुद्धि कराएँ।

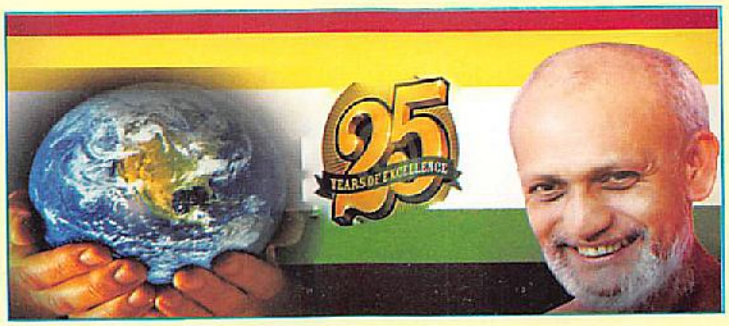

पंच
कल्याणक भी
लगभग पचास कराये।

जिन
धर्म प्रभावना
के कई कार्य कराए।

जिन
धर्म कि बन
नींव उसे सुदृढ़ बहुत किया।

मोक्ष
पथ पे कई
श्रावकों को अग्रसर किया।

लगभग
दो सौ लोगों
के किए संस्कार।

त्यागी
व्रती बना के
दिया संयम आधार।

सहस्रों
लोग कर
रहे प्रभु आराधना।

आपकी
प्रेरणा से कर
रहें हैं साधना।

मुनि
क्षुल्लक क्षुल्लिका
व आर्यिका दीक्षा।

इक्कीस
प्रदान करके
दी अध्यात्म कि शिक्षा।

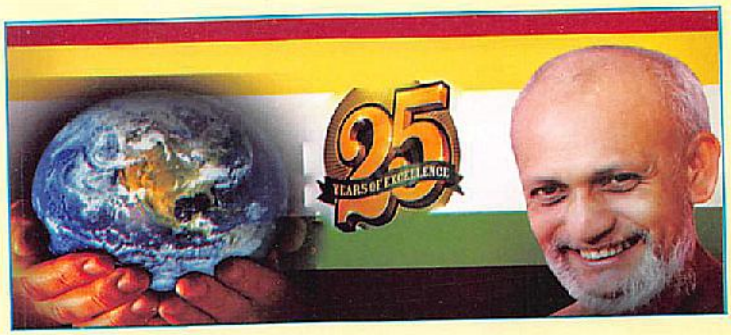

नरभव
कि परीक्षा
भी उत्तीर्ण करायी।

समाधियाँ
गुरुदेव ने
हैं आठ करायी।

जिन
धर्म कि महती
प्रभावना हैं कर रहे।

कार्य
सारे प्रारंभ
करते गुरुवर के नाम से।

गुरु
विद्यानंद राम
तो स्वयं हनुमान से।

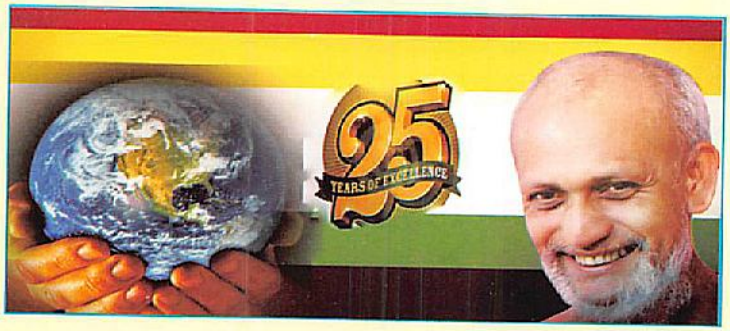

मोक्ष
के पथ पर
निरंतर ही बढ़ रहे।

व्यक्तित्व
है विराट
हृदय विशाल है पाया।

वसुनंदी
नाम से है
यश आपका गाया।

हम
नहीं सब कहते
हैं करते हो भव पार।

जिन
देव के शासन
के गुरुदेव आधार।

यादगार लम्हे

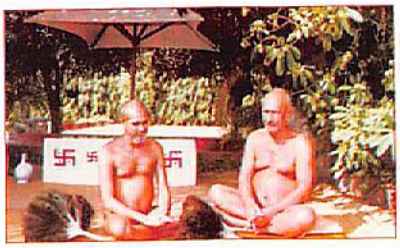

यादगार लम्हे

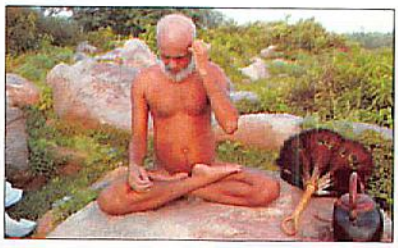
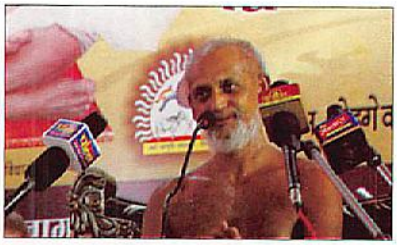

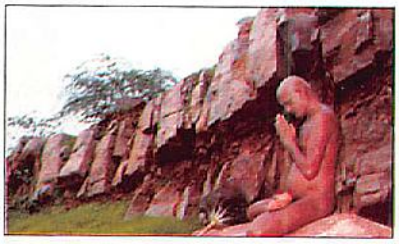

यादगार लम्हे

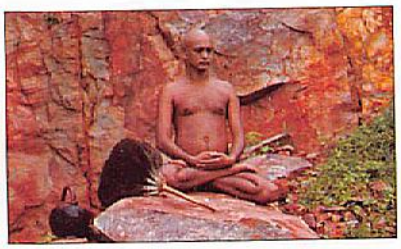

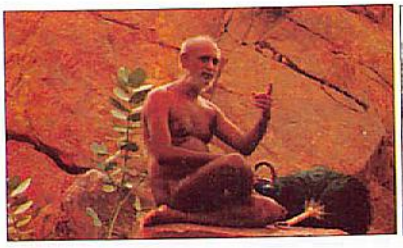

यादगार लम्हे

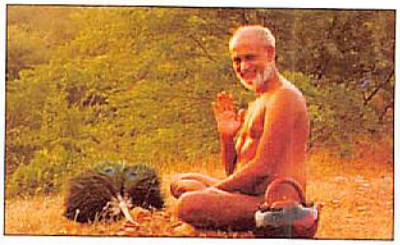

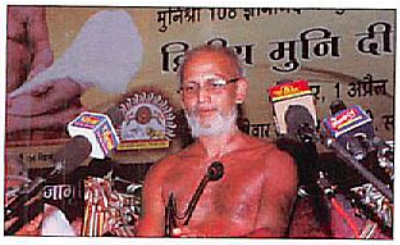

मनमोहक छवियाँ

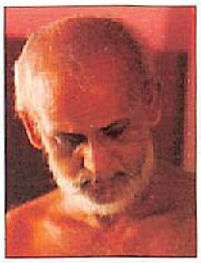

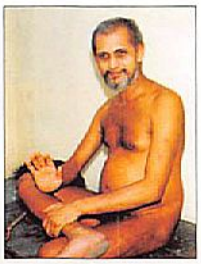

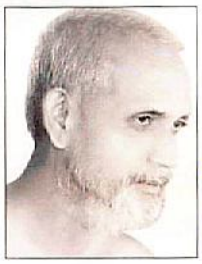

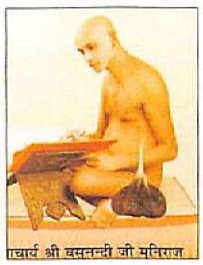

आचार्य श्री वसुनन्दी जी मुनिराज

मनमोहक छवियाँ